عقيدة أهل السنة والجماعة   هندي

अहले सुन्नत वल-जमाअ़त का अ़क़ीदा

लेखक

शैख़ मुहम्मद बिन सालेह अल-ओसैमीन (रहेमहुल्लाह)

अनुवादक

रज़ाउर्रहमान अंसारी

कम्पोज़िंग व सम्पादना

मक्तब दअ़्वा रबवा

المكتب التعاوني للدعوة وتوعية الجاليات بالربوة

ISLAMIC PROPAGATION OFFICE IN RABWAH

P.O.BOX 29465 ARRIYADH 11457

TEL 4454900 – 4916065 FAX 4970126

-e-mail:rabwah@islamhouse.com

अहले सुन्नत वल-जमाअ़त का अ़क़ीदा

प्रस्तावना

समस्त प्रशंसा केवल एक अल्लाह के लिए है। और दुरूद व सलाम नाज़िल हो उन पर जिनके बाद कोई नबी नहीं आने वाला है, तथा उनके परिवार-परिजन और साहाबा किराम पर।

मुझे 'अ़क़ीदा' (विश्वास) संबंधी इस मूल्यवान एवं संक्षिप्त पुस्तक की सूचना मिली जिसे हमारे भाई फ़ज़ीलतुश शैख़ अल्लामा मुहम्मद बिन सालेह अल-ओसैमीन ने संकलन किया है। हमने इस पुस्तक को शुरू से अंत तक पढ़वा कर सुना तो इसे अल्लाह की तौहीद, उसके नामों, गुणों, फ़रिश्तों, पुस्तकों, रसूलों, आख़िरत (परलोक) के दिन और भाग्य के अच्छे एवं बुरे होने पर ईमान के अध्यायों में सुन्नत के अनुसरण करने वालों के 'अ़क़ायद' का विशाल संग्रह पाया। इसमें कोई संदेह नहीं कि लेखक महोदय ने बड़ी उत्तमता से इसे एकत्र किया एवं उपकार योग्य बनाया है। इस पुस्तक में उन्होंने उन चीज़ों का उल्लेख किया है जो एक विद्यार्थी एवं साधारण मुसलमानों को अल्लाह, उसके फ़रिश्तों, किताबों, रसूलों, अंतिम दिन और भाग्य के अच्छे एवं बुरे होने पर ईमान के संबंध में आवश्यकता होती है, तथा इसके साथ उन्होंने अ़क़ीदा संबंधी ऐसी लाभजनक बातों का भी वर्णन किया है जो कभी कभी 'अ़क़ीदा' के बारे में लिखी गई बहुत सारी पुस्तकों में नहीं मिलतीं। अल्लाह तआला लेखक महोदय को इसका अच्छा बदला दे तथा शिक्षापूर्ण ज्ञान से सम्मानित करे। इस पुस्तक को तथा उनकी अन्य पुस्तकों को साधारण लोगों के लिए हितकर

एवं लाभदायक बनाये तथा उन्हें, हमें और हमारे सभी भाईओं को हिदायत पाने वालों और ज्ञान पर उसकी तरफ दअ़्वत देने वालों में से बनाये, निःसंदेह वह सुनने वाला एवं अत्यंत निकट है। आमीन!

दुरूद व सलाम नाज़िल हो हमारे नबी मुहम्मद पर तथा उनके परिवार-परिजन और साहाबा किराम पर।

अल्लाह तआला की रहमत व मग़फ़िरत का भिखारी
अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़ (रहेमहुल्लाह)
अर्रईसुल आम लिइदारातिल बुहूसुल इल्मिया
वल-इफ़्ता वद्दअ़्वा वल-इरशाद
रियाद, सऊदी अरब

भूमिका

समस्त प्रशंसा सारे जहान के पालनहार के लिए है, अन्तिम सफलता अल्लाह से डरने वालों के लिए है और अत्याचार केवल अत्याचारियों पर है। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य मअ़बूद (पुज्य) नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई शरीक (अंशी) नहीं, वह मलिक (बादशाह) है, हक़्क़ (सत्य) है, मुबीन (प्रकट करने वाला) है। और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद उसके बन्दे तथा उसके रसुल (संदेष्टा) हैं जो समस्त नबियों में अन्तिम हैं और सदाचारियों का अगुवा हैं। आल्लाह तआला की कृपा नाज़िल हो उन पर, उनके परिवार-परिजन पर, उनके अस्हाब (साथियों) पर और बदले के दिन तक भलाई के साथ उनके अनुयाईयों पर। अम्मा बाद!

अल्लाह तआला ने अपने रसूल मुहम्मद ﷺ को हिदायत (मार्गदर्शन) तथा सत्य धर्म देकर एवं सम्पूर्ण जगत के लिए रहमत (कृपा) तथा अच्छे कर्म करने वालों के लिए आदर्श तथा तमाम बन्दों पर हुज्जत (प्रमाण) बनाकर भेजा। आप ﷺ के ज़रीया तथा आप ﷺ पर अवतरित पुस्तक (कुरआन) के द्वारा अल्लाह तआला ने वह सब कुछ बयान कर दिया जिसमें बन्दों के लिए कल्याण तथा उनके साँसारिक एवं धार्मिक कार्यों की दृढ़ता है, जैसे सही अक़ायद, पुण्य के कर्म, उत्तम आचरण तथा नैतिकता से परिपूर्ण सभ्यता।

तथा प्यारे नबी ﷺ अपनी उम्मत को उस प्रकाशमान मार्ग

पर छोड़कर इस संसार से गये हैं जिसकी रात भी दिन की तरह प्रकाशमान है, केवल कुकर्मी एवं पापी ही इस मार्ग से भटक सकता है।

फिर आप ﷺ की उम्मत के वह लोग उस मार्ग पर दृढ़ रहे जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल ﷺ के निमंत्रण को स्वीकार किया, वह सहाबये किराम और ताबेईने इज़ाम और उन लोगों की जमाअत थी जिन्होंने उनका अनुसरण किया। वे सभी मनुष्यों में सर्वश्रेष्ठ एवं शुद्ध आत्मा वाले थे तथा उन लोगों ने प्यारे नबी ﷺ का अनुसरण किया अर्थात शरीअ़त के अनुकूल कर्म किये और सुन्नत को दृढ़ता से थामे रखा, अ़क़ीदा, उपासना (इबादत) तथा सदव्यवहार को पूर्णतः अपने ऊपर लागू किया। इस लिए यही लोग वह कल्याणकारी दल घोषित हुए जो सदा के लिए सत्य पर स्थिर रहेंगे, इनका विरोध एवं निंदा करने वाले इन्हें कोई हानी नहीं पहुँचा सकते यहाँ तक कि क़ियामत (महाप्रलय) आ जायेगी और वह इसी शास्त्र पर स्थापित रहेंगे।

और हम भी -अल्हम्दुलिल्लाह- उन्हीं के मार्ग पर चल रहे हैं तथा उनके कर्मों के तरीक़े को अपनाये हुए हैं जिसका समर्थन अल्लाह की किताब और रसूल ﷺ की सुन्नत से होता है। हम इसका चर्चा अल्लाह की नेअ़मत को बयान करने के लिए और यह बताने के लिए कर रहे हैं कि हर ईमानदार पर आवश्यक है कि वह इस तरीक़े को अपनाये।

हम अल्लाह तआला से दुआ़ करते हैं कि वह हमें तथा हमारे

मुसलमान भाईयों को लोक-परलोक में 'कलिमा-ए-तौहीद' पर दृढ़ संकल्प रखे तथा हमें अपनी कृपा से सम्मानित करे। निःसंदेह वह बहुत ही दया एवं कृपा करने वाला है।

इस विषय के महत्व को सामने रखकर और इस बारे में लोगों के प्रवृत्ति की विभक्ति के कारण मैंने बेहतर समझा कि अहले सुन्नत वल-जमाअ़त का अ़क़ीदा जिस पर हम चल रहे हैं संक्षिप्त तौर पर लिपिबद्ध करें। अहले सुन्नत वल-जमाअ़त का अ़क़ीदा यह हैः अल्लाह तआला, उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों, क़ियामत के दिन एवं भाग्य के अच्छे एवं बुरे होने पर ईमान लाना।

मैं अल्लाह तआला से दुआ़ करता हूँ कि वह इस कार्य को विशुद्धता के साथ अपने लिए करने का सामर्थ्य दे, इसका शुमार प्रिय कर्मों में करे तथा अपने बन्दों के लिए लाभदायक बनाये। आमीन या रब्बल आलमीन!

अध्यायः १

हमारा अ़क़ीदा (विश्वास)

हमारा अ़क़ीदाः अल्लाह, उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों, आख़िरत के दिन और तक़्दीर की भलाई-बुराई पर ईमान लाना।

अल्लाह तआला पर ईमान

हम अल्लाह तआला की 'रुबूबियत' पर ईमान रखते हैं, अर्थात केवल वही पालने वाला, पैदा करने वाला, हर चीज़ का स्वामी तथा सभी कार्यों का उपाय करने वाला है।

और हम अल्लाह तआला की 'उलूहियत' (पुज्य होने) पर ईमान रखते हैं, अर्थात वही सच्चा मअ़्बूद है, और उसके अतिरिक्त तमाम मअ़्बूद असत्य तथा बातिल हैं।

और अल्लाह तआला के नामों तथा उसके गुणों पर भी हमारा ईमान है, अर्थात अच्छे से अच्छा नाम और उच्चतम तथा पूर्णतम गुण उसी के लिए हैं।

और हम उसकी वहदानियत (एकत्ववाद) पर ईमान रखते हैं, अर्थात यह कि उसकी रुबूबियत, उलूहियत तथा असमा व सिफ़ात (नाम व गुण) में उसका कोई शरीक नहीं। अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿رَّبُّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَٱعْبُدْهُ وَٱصْطَبِرْ لِعِبَٰدَتِهِۦ ۚ هَلْ تَعْلَمُ لَهُۥ سَمِيًّا﴾ [سورة مريم: ٦٥]

''वह आकाशों एवं धरती का तथा जो कुछ उन दोनों के बीच

है सबका प्रभु है, इसलिए उसी की उपासना करो तथा उसी की उपासना पर दृढ़ रहो। क्या तुम उसका कोई समनाम जानते हो?'' (सूरह मरयमः ६५)

और हमारा ईमान है किः

﴿ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْحَيُّ ٱلْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُۥ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَّهُۥ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ۗ مَن ذَا ٱلَّذِى يَشْفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذْنِهِۦ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَىْءٍ مِّنْ عِلْمِهِۦٓ إِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ ۖ وَلَا يَـُٔودُهُۥ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ ٱلْعَلِىُّ ٱلْعَظِيمُ﴾ [سورة البقرة: ٢٥٥]

''अल्लाह तआला ही सत्य मअ़बूद है, उसके अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं, जो जीवित है, सदैव स्वयं स्थिर रहने वाला है, उसे न ऊँघ आती है और न ही नींद, जो कुछ आकाशों में तथा जो कुछ धरती में हैं उसी का है। कौन है जो उसकी आज्ञा के बिना उसके सामने किसी की सिफ़ारिश (अभिस्ताव) कर सके? जो कुछ लोगों के सामने हो रहा है तथा जो कुछ उनके पीछे हो चुका है वह सब जानता है। और वह उसके ज्ञान में से किसी चीज़ का घेरा नहीं कर सकते, परन्तु वह जितना चाहे। उसकी कुर्सी की परिधि ने आकाश एवं धरती को घेरे में ले रखा है। तथा उसके लिए इनकी रक्षा कठिन नहीं। वह तो बड़ा उच्च एवं महान है।'' (सूरह बक़रहः २५५)

और हमारा ईमान है किः

﴿هُوَ ٱللَّهُ ٱلَّذِى لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَٰلِمُ ٱلْغَيْبِ وَٱلشَّهَٰدَةِ ۖ هُوَ ٱلرَّحْمَٰنُ ٱلرَّحِيمُ ﴿٢٢﴾ هُوَ ٱللَّهُ ٱلَّذِى لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْمَلِكُ ٱلْقُدُّوسُ ٱلسَّلَٰمُ ٱلْمُؤْمِنُ ٱلْمُهَيْمِنُ ٱلْعَزِيزُ ٱلْجَبَّارُ ٱلْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحَٰنَ ٱللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٢٣﴾ هُوَ ٱللَّهُ ٱلْخَٰلِقُ ٱلْبَارِئُ ٱلْمُصَوِّرُ ۖ لَهُ ٱلْأَسْمَآءُ ٱلْحُسْنَىٰ ۚ يُسَبِّحُ لَهُۥ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ﴾ [سورة الحشر: ٢٢-٢٤]

''वही अल्लाह है जिसके अतिरिक्त कोई सत्य मअ़बूद नहीं। परोक्ष तथा प्रत्यक्ष्य का जानने वाला है। वह बहुत बड़ा दयावान एवं अति कृपालू है। वही अल्लाह है जिसके अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं, स्वामी, अत्यन्त पवित्र, सभी दोषों से मुक्त, शान्ति करने वाला, रक्षक, बलिष्ठ, प्रभावशाली है। लोग जो साझीदार बनाते हैं अल्लाह उससे पाक एवं पवित्र है। वही अल्लाह सृष्टिकर्ता, आविष्कारक, रूप देने वाला है। अच्छे अच्छे नाम उसी के लिए हैं। आकाशों एवं धरती में जितनी चीज़ें हैं सब उसकी तस्बीह (पवित्रता) बयान करती हैं और वही प्रभावशाली एवं हिक्मत वाला है।'' (सूरह हश्रः २२-२४)

और हमारा ईमान है कि आकाशों तथा धरती की राजत्य उसी के लिए है:

﴿لِّلَّهِ مُلْكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ يَهَبُ لِمَن يَشَآءُ إِنَٰثًا وَيَهَبُ لِمَن يَشَآءُ ٱلذُّكُورَ ﴿٤٩﴾ أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَإِنَٰثًا ۖ وَيَجْعَلُ مَن يَشَآءُ عَقِيمًا ۚ إِنَّهُۥ عَلِيمٌ قَدِيرٌ﴾ [سورة الشورى: ٤٩-٥٠]

''आकाशों एवं धरती की बादशाही केवल उसी के लिए है। वह जो चाहे पैदा करता है, जिसे चाहता है बेटीयाँ देता है और जिसे चाहता है बेटा देता है, या उनको बेटे और बेटीयाँ दोनों से कृपा करता है और जिसे चाहता है निःसंतान रखता है। निःसंदेह वह जानने वाला तथा शक्ति वाला है।'' (सूरह शूराः ४९-५०)

और हमारा ईमान है किः

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِۦ شَىْءٌ ۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْبَصِيرُ ﴿١١﴾ لَهُۥ مَقَالِيدُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُۥ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ﴾ [سورة الشورى: ١١-١٢]

''उस जैसी कोई चीज़ नहीं, वह ख़ूब सुनने वाला देखने वाला है। आकाशों एवं धरती की कुंजियाँ उसी के पास हैं। वह जिसके लिए चाहता है जीविका विस्तृत कर देता है तथा (जिसके लिए चाहता है) थोड़ा कर देता है। निःसंदेह वह प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है।'' (सूरह शूराः ११-१२)

और हमारा ईमान है किः

﴿وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِى ٱلْأَرْضِ إِلَّا عَلَى ٱللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ كُلٌّ فِى كِتَٰبٍ مُّبِينٍ﴾ [سورة هود: ٦]

''धरती पर कोई चलने फिरने वाला नहीं मगर उसकी जीविका अल्लाह के ज़िम्मा है। वही उनके रहने का स्थान भी जानता है तथा उनको अर्पित किये जाने का स्थान भी, यह सब कुछ खुली किताब (लौहे महफ़ूज़) में मौजूद है।'' (सूरह हूदः ६)

और हमारा ईमान है किः

﴿وَعِندَهُۥ مَفَاتِحُ ٱلْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ إِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِى ٱلْبَرِّ وَٱلْبَحْرِ ۚ وَمَا تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِى ظُلُمَٰتِ ٱلْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِى كِتَٰبٍ مُّبِينٍ﴾ [سورة الأنعام: ٥٩]

''तथा उसी के पास परोक्ष की कुंजियाँ हैं, जिनको उसके अतिरिक्त कोई नहीं जानता। तथा उसे थल एवं जल की तमाम चीज़ों का ज्ञान है। तथा कोई पत्ता भी झड़ता है तो वह उसको जानता है तथा धरती के अंधेरों में कोई अन्न तथा हरी या सूखी चीज़ ऐसी नहीं मगर उसका उल्लेख खुली किताब (लौहे महफ़ूज़) में है।'' (सूरह अनआ़मः ५६)

और हमारा ईमान है किः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ عِندَهُۥ عِلْمُ ٱلسَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ ٱلْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِى ٱلْأَرْحَامِ ۖ وَمَا تَدْرِى نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۖ وَمَا تَدْرِى نَفْسٌۢ بِأَىِّ أَرْضٍ تَمُوتُ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌۢ﴾ [سورة لقمان: ٣٤]

''निःसंदेह अल्लाह ही के पास क़ियामत (महाप्रलय) का ज्ञान है। तथा वही वर्षा देता है, तथा जो कुछ गर्भाशय में है (उसकी वास्तविकता) वही जानता है, तथा कोई नहीं जानता कि कल वह क्या कमायेगा, तथा कोई जीवधारी नहीं जानता कि धरती के किस क्षेत्र में उसकी मृत्यु होगी। निःसंदेह अल्लाह ही पूर्ण ज्ञानवाला एवं सही ख़बरों वाला है।'' (सूरह लुक़मानः ३४)

और हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला जो चाहे, जब चाहे तथा जैसे चाहे कलाम (बात) करता है।

﴿وَكَلَّمَ ٱللَّهُ مُوسَىٰ تَكۡلِيمًا﴾ [سورة النساء: ١٦٤]

''और अल्लाह ने मूसा (عليه السلام) से बात की।'' (सूरह निसाः १६४)

﴿وَلَمَّا جَآءَ مُوسَىٰ لِمِيقَٰتِنَا وَكَلَّمَهُۥ رَبُّهُۥ﴾ [سورة الأعراف: ١٤٣]

''और जब मूसा (عليه السلام) हमारे समय पर (तूर पहाड़ पर) आये और उनके रब ने उनसे बातें कीं।'' (सूरह आराफ़ः १४३)

﴿وَنَٰدَيۡنَٰهُ مِن جَانِبِ ٱلطُّورِ ٱلۡأَيۡمَنِ وَقَرَّبۡنَٰهُ نَجِيًّا﴾ [سورة مريم: ٥٢]

''और हमने उनको तूर के दायें ओर से पुकारा और गुप्त बात कहने के लिए निकट बुलाया।'' (सूरह मरयमः ५२)

और हमारा ईमान है किः

﴿لَّوۡ كَانَ ٱلۡبَحۡرُ مِدَادًا لِّكَلِمَٰتِ رَبِّي لَنَفِدَ ٱلۡبَحۡرُ قَبۡلَ أَن تَنفَدَ كَلِمَٰتُ رَبِّي﴾ [سورة الكهف: ١٠٩]

''यदि समुद्र मेरे प्रभु की बातों को लिखने के लिए स्याही हो तो पूर्व इसके कि मेरे प्रभु की बातें समाप्त हों समुद्र समाप्त हो जाये।'' (सूरह कहफ़ः १०६)

﴿وَلَوۡ أَنَّمَا فِي ٱلۡأَرۡضِ مِن شَجَرَةٍ أَقۡلَٰمٞ وَٱلۡبَحۡرُ يَمُدُّهُۥ مِنۢ بَعۡدِهِۦ سَبۡعَةُ أَبۡحُرٖ مَّا نَفِدَتۡ كَلِمَٰتُ ٱللَّهِۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٞ﴾ [سورة لقمان: ٢٧]

''यदि ऐसा हो कि धरती पर जितने वृक्ष हैं सब क़लम हों तथा

समुद्र स्याही हो तथा उसके बाद सात समुद्र और स्याही हो जायें फिर भी अल्लाह की बातें समाप्त नहीं हो सकतीं। निःसंदेह अल्लाह प्रभावशाली एवं हिक्मत वाला है।'' (सूरह लुक़मानः २७)

और हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला के कलिमात सुचनाओं में पूर्ण सत्य, हुक्म-अहकाम (विधि-विधान) में परिपूर्ण न्याय सम्बलित तथा बातों में सम्पूर्ण सुंदर हैं। अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا﴾ [سورة الأنعام: ١١٥]

''तथा तुम्हारे प्रभु की बातें सत्य एवं न्याय से परिपूर्ण हैं।'' (सूरह अनआ़मः ११५) और फरमायाः

﴿وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا﴾ [سورة النساء: ٨٧]

''तथा अल्लाह से बढ़कर सत्य बात कहने वाला कौन है?'' (सूरह निसाः ८७)

तथा हम इस पर भी ईमान रखते हैं कि क़ुरआने करीम अल्लाह का शुभ कथन है, निःसंदेह उसने बात की है और जिब्रील عليه السلام पर 'इलक़ा' (वह बात जो अल्लाह किसी के दिल में डालता है) किया, फिर जिब्रील عليه السلام ने प्यारे नबी ﷺ के दिल में उतारा। अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِن رَّبِّكَ بِالْحَقِّ﴾ [سورة النحل: ١٠٢]

''कह दीजीए उसको 'रूहुल क़ुदुस' (जिब्रील عليه السلام) तुम्हारे प्रभु की ओर से सत्यता के साथ लेकर आये हैं।'' (सूरह नहलः १०२)

﴿وَإِنَّهُۥ لَتَنزِيلُ رَبِّ ٱلْعَـٰلَمِينَ ۝١٩٢ نَزَلَ بِهِ ٱلرُّوحُ ٱلْأَمِينُ ۝١٩٣ عَلَىٰ قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ ٱلْمُنذِرِينَ ۝١٩٤ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِينٍ ۝١٩٥﴾ [سورة الشعراء: ١٩٢-١٩٥]

''और यह (पवित्र कुरआन) सारे जहान के पालनहार की ओर से अवतरित किया हुआ है जिसको लेकर 'रूहुल अमीन' (जिब्रील عليه السلام) आये, तुम्हारे दिल में डाला, ताकि तुम लोगों को डराने वालों में से हो जाओ, (यह कुरआन) स्वच्छ अरबी भाषा में है।'' (सूरह शुअ़राः १९२-१९५)

और हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला अपनी ज़ात एवं गुणों में अपनी सृष्टि पर उच्च है। उसने स्वयं फरमायाः

﴿وَهُوَ ٱلْعَلِىُّ ٱلْعَظِيمُ﴾ [سورة البقرة: ٢٥٥]

''वह बहुत उच्च एवं बहुत महान है।'' (सूरह बक़रहः २५५) और फरमायाः

﴿وَهُوَ ٱلْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِۦ ۚ وَهُوَ ٱلْحَكِيمُ ٱلْخَبِيرُ﴾ [الأنعام: ١٨]

''तथा वह अपने बन्दों पर प्रभावशाली है, और वह बड़ी हिक्मत वाला और पूरी ख़बर रखने वाला है।'' (सूरह अनआ़मः १८)

और हमारा ईमान है किः

﴿إِنَّ رَبَّكُمُ ٱللَّهُ ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ فِى سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ ٱسْتَوَىٰ عَلَى ٱلْعَرْشِ ۖ يُدَبِّرُ ٱلْأَمْرَ﴾ [سورة يونس: ٣]

''निःसंदेह तुम्हारा पालक अल्लाह ही है जिसने आकाशों तथा धरती को छः दिनों में बनाया फिर अर्श पर उच्चय हुआ, वह

प्रत्येक कार्य का व्यवस्था करता है।'' (सूरह यूनुसः ३) और अल्लाह तआला का अर्श पर उच्चय होने का अर्थ यह है कि अपनी ज़ात के साथ उस पर बुलंद व बाला हुआ जिस प्रकार की बुलंदी उसकी शान तथा महानता के योग्य है, जिसकी स्थिति का विवरण उसके अतिरिक्त किसी को भी मालूम नहीं है।

और हम इस पर भी ईमान रखते हैं कि अल्लाह तआला अर्श पर रहते हुये भी (अपने ज्ञान के माध्यम) अपनी सृष्टि के साथ होता है, उनकी दशाओं को जानता है, बातों को सुनता है, कार्यों को देखता है तथा उनके सभी कार्यों का उपाय करता है, भिक्षुक को जीविका प्रदान करता है, निर्बल को शक्ति एवं बल देता है, जिसे चाहे राज्य देता है और जिससे चाहे राज्य छीन लेता है, जिसे चाहे सम्मान देता है और जिसे चाहे अपमानित करता है, उसी के हाथ में कल्याण है और वह प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्य रखता है। और जिसकी यह शान हो वह हक़ीक़त में अर्श पर रहते हुये भी (अपने ज्ञान के माध्यम) हक़ीक़त में अपने सृष्टि के साथ रह सकता है।

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِۦ شَيْءٌ ۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْبَصِيرُ﴾ [سورة الشورى: ١١]

''उस जैसी कोई चीज़ नहीं, वह ख़ूब सुनने वाला देखने वाला है।'' (सूरह शूराः ११)

लेकिन हम जहमिया समुदाय में से हुलूलिया फ़िर्क़ा की तरह यह नहीं कहते कि वह धरती में अपने सृस्टि के साथ है। हमारा विचार है कि जो व्यक्ति ऐसा कहे वह या तो गुमराह है या फिर काफिर। क्योंकि उसने अल्लाह तआला को ऐसे अपूर्ण

गुणों के साथ विशेषित किया जो उसकी शान के योग्य नहीं।

और हमारा इस पर भी ईमान है कि प्यारे नबी ﷺ ने जो अल्लाह के संबंध में सूचित किया है कि वह हर रात जब एक तिहाई बाक़ी रह जाती है तो पृथिवी से निकट आकाश पर नाज़िल होता है और कहता हैः ((कौन है जो मुझे पुकारे कि मैं उसके पुकार को सुनूँ? कौन है जो मुझसे माँगे कि मैं उसको दूँ? कौन है जो मुझसे माफी तलब करे कि मैं उसे माफ कर दूँ?))

और हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन बन्दों के बीच फैसला करने के लिए आयेगा। अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿كَلَّآ إِذَا دُكَّتِ ٱلْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا ﴿٢١﴾ وَجَآءَ رَبُّكَ وَٱلْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾ وَجِاْىٓءَ يَوْمَئِذٍۭ بِجَهَنَّمَ ۚ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ ٱلْإِنسَٰنُ وَأَنَّىٰ لَهُ ٱلذِّكْرَىٰ ﴿٢٣﴾﴾ [سورة الفجر: ٢١-٢٣]

“निःसंदेह जब धरती कूट कूट कर समतल कर दी जायेगी, तथा तुम्हारा रब (प्रभु) आयेगा और फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध होकर आयेंगे, तथा उस दिन नरक (दोज़ख़) को लाया जायेगा तो मनुष्य उस दिन शिक्षा ग्रहण करेगा किन्तु उस दिन शिक्षा ग्रहण करने से क्या लाभ?” (सूरह फ़ज्रः २१-२३)

और हमारा ईमान है कि आल्लाह तआलाः

﴿فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ﴾ [سورة البروج: ١٦]

''वह जो चाहे उसे कर देने वाला है।'' (सूरह बुरूजः १६)

और हम इस पर भी ईमान रखते हैं कि उसके इरादा की दो क़िस्में हैं:

१- इरादाये कौनियाः

यह हर हाल में प्रकट हो जाता है तथा यह आवश्यक नहीं कि यह उसे पसंद ही हो, तथा यही इरादा है जो 'मशीयते इलाही' अर्थात 'इश्वरेच्छा' के अर्थ में है। जैसाकि अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ مَا ٱقْتَتَلُوا۟ وَلَـٰكِنَّ ٱللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ﴾ [سورة البقرة: ٢٥٣]

''और यदि अल्लाह तआला चाहता तो यह लोग आपस में न लड़ते किन्तु अल्लाह जो चाहता है करता है।'' (सूरह बक़रहः २५३)

﴿وَلَا يَنفَعُكُمْ نُصْحِىٓ إِنْ أَرَدتُّ أَنْ أَنصَحَ لَكُمْ إِن كَانَ ٱللَّهُ يُرِيدُ أَن يُغْوِيَكُمْ ۚ هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ﴾ [سورة هود: ٣٤]

''तुम्हें मेरी शुभचिन्ता कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकती, चाहे मैं जितना ही तुम्हारा शुभचिंतक क्यों न हूँ, यदि अल्लाह की इच्छा तुम्हें भटकाने की हो। वही तुम सब का प्रभु है तथा उसी की ओर लौट कर जाओगे।'' (सूरह हूदः ३४)

२- इरादये शरइयाः

आवश्यक नहीं कि यह प्रकट हो जाये, और इसमें उद्दिष्ट विषय अल्लाह को प्रिय ही होता है। जैसाकि अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿وَٱللَّهُ يُرِيدُ أَن يَتُوبَ عَلَيۡكُمۡ﴾ [سورة النساء: ٢٧]

''और अल्लाह तआला तो चाहता है कि तुम्हारी तौबा क़बूल करे।'' (सूरह निसाः २७)

और हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला का इरादा चाहे 'कौनी' हो या 'शरई' उसकी हिक्मत के अधीन है। अतः हर वह विषय जिसका फैसला अल्लाह तआला ने स्वीय इच्छानुसार किया है अथवा इरादा शरइया के अनुसार उसकी सृष्टि ने उसकी इबादत की है, यह सब कुछ हिक्मत के कारण तथा हिक्मत के मुताबिक़ होता है, चाहे हमें उसका ज्ञान हो या न हो अथवा हमारी बुद्धि उसको समझने से असमर्थ हो।

﴿أَلَيۡسَ ٱللَّهُ بِأَحۡكَمِ ٱلۡحَٰكِمِينَ﴾ [سورة التين: ٨]

''क्या अल्लाह समस्त हाकिमों का हाकिम नहीं है?'' (सूरह तीनः ८)

﴿وَمَنۡ أَحۡسَنُ مِنَ ٱللَّهِ حُكۡمًا لِّقَوۡمٍ يُوقِنُونَ﴾ [سورة المائدة: ٥٠]

''तथा जो लोग विश्वास रखते हैं उनके लिए अल्लाह से बढ़कर उत्तम निर्णय करने वाला कौन हो सकता है?'' (सूरह माइदाः ५०)

और हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला अपने औलिया से महब्बत करता है तथा वह भी अल्लाह से महब्बत करते हैं।

﴿قُلۡ إِن كُنتُمۡ تُحِبُّونَ ٱللَّهَ فَٱتَّبِعُونِي يُحۡبِبۡكُمُ ٱللَّهُ﴾ [سورة آل عمران: ٣١]

''कह दीजीए कि यदि तुम अल्लाह से महब्बत करते हो तो मेरा अनुसरण करो अल्लाह तुमसे महब्बत करेगा।'' (सूरह आले इमरानः ३१)

﴿فَسَوْفَ يَأْتِي ٱللَّهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُۥٓ﴾ [سورة المائدة: ٥٤]

''तो अल्लाह तआला ऐसे लोगों को पैदा कर देगा जिनसे वह महब्बत करेगा तथा वह उससे महब्बत करेंगे।'' (सूरह माइदाः ५४)

﴿وَٱللَّهُ يُحِبُّ ٱلصَّـٰبِرِينَ﴾ [سورة آل عمران: ١٤٦]

''तथा अल्लाह धैर्य रखने वालों से महब्बत करता है'' (सूरह आले इमरानः १४६)

﴿وَأَقْسِطُوٓا۟ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلْمُقْسِطِينَ﴾ [سورة الحجرات: ٩]

''तथा न्याय से काम लो, निःसंदेह अल्लाह न्याय करने वालों से महब्बत करता है।'' (सूरह हुजुरातः ६)

﴿وَأَحْسِنُوٓا۟ ۛ إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلْمُحْسِنِينَ﴾ [سورة البقرة: ١٩٥]

''और एहसान करो, निःसंदेह अल्लाह एहसान करने वालों से महब्बत करता है।'' (सूरह बक़रहः १६५)

और हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला ने जिन कर्मों तथा कथनों को धर्मानुकूल किया है वह उसे प्रिय हैं और जिनसे रोका है वह उसे अप्रिय हैं।

﴿إِن تَكْفُرُوا۟ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَنِىٌّ عَنكُمْ ۖ وَلَا يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ ٱلْكُفْرَ ۖ وَإِن تَشْكُرُوا۟ يَرْضَهُ لَكُمْ﴾ [سورة الزمر: ٧]

''यदि तुम कृतघ्नता व्यक्त करोगे तो अल्लाह तुमसे निस्पृह है, वह अपने बन्दों के लिए कृतघ्नता पसंद नहीं करता है, और यदि कृतज्ञता करोगे तो वह उसको तुम्हारे लिए पसंद करेगा।'' (सूरह ज़ुमरः ७)

﴿وَلَٰكِن كَرِهَ ٱللَّهُ ٱنۢبِعَاثَهُمۡ فَثَبَّطَهُمۡ وَقِيلَ ٱقۡعُدُواْ مَعَ ٱلۡقَٰعِدِينَ﴾

[سورة التوبة: ٤٦]

''परन्तु अल्लाह तआला ने उनके उठने को प्रिय न माना, इसलिए उन्हें हिलने-जुलने ही न दिया और उनसे कह दिया गया कि तुम बैठने वालों के साथ बैठे ही रहो।'' (सूरह तौबाः ४६)

और हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला ईमान लाने वालों तथा नेक अमल करने वालों से प्रसन्न होता है।

﴿رَّضِيَ ٱللَّهُ عَنۡهُمۡ وَرَضُواْ عَنۡهُۚ ذَٰلِكَ لِمَنۡ خَشِيَ رَبَّهُۥ﴾ [سورة البينة: ٨]

''अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ तथा वह अल्लाह से प्रसन्न हुए। यह उसके लिए है जो अपने प्रभु से डरे।'' (सूरह बय्यिनाः ८)

और हमारा ईमान है कि काफिर इत्यादियों में से जो क्रोध के अधिकारी हैं अल्लाह उन पर क्रोध प्रकट करता है।

﴿ٱلظَّآنِّينَ بِٱللَّهِ ظَنَّ ٱلسَّوۡءِۚ عَلَيۡهِمۡ دَآئِرَةُ ٱلسَّوۡءِۖ وَغَضِبَ ٱللَّهُ عَلَيۡهِمۡ﴾ [سورة الفتح: ٦]

''जो लोग अल्लाह के संबंध में बुरे गुमान रखने वाले हैं उन्हीं पर बुराई का चक्र है तथा अल्लाह उनसे क्रोधित हुए।'' (सूरह फ़तूहः ६)

﴿وَلَٰكِن مَّن شَرَحَ بِٱلۡكُفۡرِ صَدۡرٗا فَعَلَيۡهِمۡ غَضَبٞ مِّنَ ٱللَّهِ وَلَهُمۡ عَذَابٌ عَظِيمٞ﴾ [سورة النحل: ١٠٦]

''परन्तु जो लोग खुले दिल से कुफ़्र करें तो उन पर अल्लाह

का क्रोध है तथा उन्हीं के लिए बहुत बड़ी यातना है।'' (सूरह नह्लः १०६)

और हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला का मुख है जो महानता तथा सम्मान से विशेषित है।

﴿وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو ٱلْجَلَٰلِ وَٱلْإِكْرَامِ﴾ [سورة الرحمن: ٢٧]

''तथा तेरे प्रभु का मुख जो महान एवं सम्मानित है बाक़ी रहेगा।'' (सूरह रहमानः २७)

और हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला के महान एवं कृपा वाले दो हाथ हैं।

﴿بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُنفِقُ كَيْفَ يَشَآءُ﴾ [سورة المائدة: ٦٤]

''बल्कि उसके दोनों हाथ खुले हुए हैं, वह जिस प्रकार चाहता है ख़र्च करता है।'' (सूरह माइदाः ६४)

﴿وَمَا قَدَرُواْ ٱللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِۦ وَٱلْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُۥ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ وَٱلسَّمَٰوَٰتُ مَطْوِيَّٰتُۢ بِيَمِينِهِۦ ۚ سُبْحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ﴾

[سورة الزمر: ٦٧]

''तथा उन्होंने अल्लाह का जिस प्रकार सम्मान करना चाहिए था नहीं किया, क़ियामत के दिन सम्पूर्ण धरती उसकी मुट्ठी में होगी तथा आकाश उसके दायें हाथ में लपेटे होंगे, वह उन लोगों के शिर्क से पवित्र एवं सर्वोपरी है।'' (सूरह ज़ुमरः ६७)

और हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला की दो वास्तविक आँखें हैं। अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿وَٱصۡنَعِ ٱلۡفُلۡكَ بِأَعۡيُنِنَا وَوَحۡيِنَا﴾ [سورة هود: ٣٧]

''तथा एक नाव हमारी आँखों के सामने और हमारे हुक्म से बनाओ।'' (सूरह हूदः ३७) और नबी ﷺ ने फरमायाः

((حِجَابُهُ النُّوْرُ لَوْ كَشَفَهُ لَأَحْرَقَتْ سُبْحَاتُ وَجْهِهِ مَا انْتَهَى إِلَيْهِ بَصَرُهُ مِنْ خَلْقِهِ))

((अल्लाह तआला का पर्दा नूर (ज्योति) है, यदि उसे उठा दे तो उसके मुख की ज्योतियों से उसके सृष्टि जलकर राख हो जायें।)) (मुस्लिमः २६३)

तथा सुन्नत के अनुसरण करने वालों का इस बात पर इजमा (एकमत) है कि अल्लाह तआला की आँखें दो हैं जिसकी पुष्टि दज्जाल के बारे में नबी ﷺ के इस फरमान से होती हैः

((إِنَّهُ أَعْوَرُ، وإِنَّ رَبَّكُمْ لَيْسَ بِأَعْوَرَ))

((दज्जाल काना है तथा तुम्हारा प्रभु काना नहीं है।))

और हमारा ईमान है किः

﴿لَّا تُدۡرِكُهُ ٱلۡأَبۡصَٰرُ وَهُوَ يُدۡرِكُ ٱلۡأَبۡصَٰرَۖ وَهُوَ ٱللَّطِيفُ ٱلۡخَبِيرُ﴾ [سورة الأنعام: ١٠٣]

''निगाहें उसे परिवेष्टन नहीं कर सकतीं तथा वह सब निगाहों को परिवेष्टन करता है, और वह सूक्ष्यदर्शी तथा सर्वसूचित है।'' (सूरह अनआ़मः १०३)

और हमारा ईमान है कि ईमानदार लोग क़ियामत के दिन अपने प्रभु को देखेंगे।

﴿وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾ إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ﴾ [سورة القيامة: ٢٢-٢٣]

''उस दिन बहुत से मुख प्रफुल्लित होंगे, अपने प्रभु की ओर देख रहे होंगे।'' (सूरह क़ियामा: २२-२३)

और हमार ईमान है कि अल्लाह के गुणों के परिपूर्ण होने के कारण उसका समकक्ष कोई नहीं है।

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِۦ شَيْءٌ ۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْبَصِيرُ﴾ [سورة الشورى: ١١]

''उस जैसी कोई चीज़ नहीं, वह ख़ूब सुनने वाला देखने वाला है।'' (सूरह शूराः ११)

और हमारा ईमान है किः

﴿لَا تَأْخُذُهُۥ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ﴾ [سورة البقرة: ٢٥٥]

''उसे न ऊँघ आती है और न ही नींद।'' (सूरह बक़रहः २५५) क्योंकि उसमें जीवन तथा स्थिरता का गुण परिपूर्ण है।

और हमारा ईमान है कि वह अपने पूर्ण न्याय एवं इन्साफ के गुणों के कारण किसी पर अत्याचार नहीं करता। तथा उसकी निगरानी एवं परिवेष्टन के पूर्णता के कारण वह अपने बन्दों के कर्मों से बेख़बर नहीं है।

और हमारा ईमान है कि उसके पूर्ण ज्ञान एवं क्षमता के कारण आकाश तथा धरती की कोई चीज़ उसे लाचार नहीं कर सकती।

﴿إِنَّمَآ أَمْرُهُۥٓ إِذَآ أَرَادَ شَيْـًٔا أَن يَقُولَ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ﴾ [سورة يس: ٨٢]

''उसकी शान यह है कि वह जब किसी चीज़ का इरादा करता

है तो कह देता है कि हो जा, तो हो जाता है।'' (सूरह यासीनः ८२)

और हमारा ईमान है कि उसकी शक्ति के पूर्णता के कारण उसे कभी लाचारी एवं थकावट का सामना करना नहीं पड़ता।

﴿وَلَقَدْ خَلَقْنَا ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِى سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا مِن لُّغُوبٍ﴾ [سورة ق: ٣٨]

''और हम ने आकाशों एवं धरती को तथा उसके अंदर जो कुछ है सबको छः दिन में पैदा कर दिया और हमें ज़रा भी थकावट नहीं हुई।'' (सूरह क़ाफ़ः ३८)

और हमारा ईमान अल्लाह तआला के उन नामों एवं गुणों पर है जिनका प्रमाण स्वयं अल्लाह तआला की बातों से अथवा उसके रसूल ﷺ की बातों से मिलता है। किन्तु हम दो बड़ी त्रुटियों से अपने आपको बचाते हैं, वह यह हैंः

१- समानताः अर्थात दिल या ज़ुबान से यह कहना कि अल्लाह तआला के गुण मनुष्य के गुणों के समान हैं।

२- अवस्थाः अर्थात दिल या ज़ुबान से यह कहना कि अल्लाह तआला के गुणों की कैफ़ियत इस इस प्रकार है।

और हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला उन सब गुणों से पाक एवं पवित्र है जिनका अपनी ज़ात के संबंध में उसने स्यवं या उसके रसूल ﷺ ने अस्वीकृति दी है। यह ध्यान रहे कि उस अस्वीकृति में संकेत के तौर पर उसके विपरीत पूर्ण गुणों का प्रमाण भी है। और हम उन गुणों से ख़ामोशी एख़्तियार करते हैं जिनसे अल्लाह और उसके रसूल ﷺ ख़ामोश हैं।

और हम समझते हैं कि इस मार्ग पर चलना अनिवार्य है

तथा इसके बिना कोई चारा नहीं। क्योंकि जिन चीज़ों को स्वयं अल्लाह तआला ने अपने लिए साबित किया या जिनका इन्कार किया वह ऐसी सूचना है जो उसने अपने संबंध में सूचना दी है, जो कि अपने बारे में सबसे ज़्यादा जानकार है, सबसे ज़्यादा सच बोलने वाला है, सबसे उत्तम बात करने वाला है और बन्दों का ज्ञान तो उसका परिवेष्टन कदापि नहीं कर सकता।

तथा अल्लाह के बारे में उसके रसूल ﷺ ने उसके लिए जिन चीज़ों को साबित किया या जिनका इन्कार किया वह ऐसी सूचना है जो उन्होंने अल्लाह के संबंध में दी है, जो कि अपने प्रभु के बारे में लोगों में सबसे ज़्यादा जानकार हैं, सबसे ज़्यादा शुभचिंतक हैं, सबसे ज़्यादा सच बोलने वाले और सबसे ज़्यादा विशुद्धभाषी हैं।

अतः अल्लाह और उसके रसूल ﷺ के कलाम में ज्ञान, सच्चाई तथा विवरण की पूर्णता है। इसलिए उसके अस्वीकार करने या उसकी स्वीकृति में संदेह करने में कोई उज़्र नहीं।

अध्यायः २

अल्लाह तआला की वह सभी गुण जिनकी चर्चा हमने पिछले पृष्ठों की है उनके बारे में हम अपने प्रभु की किताब (क़ुरआन) तथा अपने प्यारे नबी ﷺ की सुन्नत (हदीस) पर निर्भर करते हैं। और इस विषय में उम्मत के सलफ़ तथा उनके बाद आने वाले इमामों के मनूहज (तरीक़े) पर चलते हैं।

हम समझते हैं कि अल्लाह तआला की किताब और रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत के नुसूस (क़ुरआन हदीस की वाणी) को उनके ज़ाहिरी (प्रत्यक्ष) अर्थ में लेना और उनको उस हक़ीक़त पर महमूल करना (यानी प्रकृतार्थ में लेना) जो अल्लाह तआला के लिए उचित तथा मुनासिब है।

हम बरी तथा मुक्त हैं फेर-बदल करने वालों के तरीक़ों से जिन्होंने किताब व सुन्नत के उन नुसूस को उस तरफ फेर दिया जो अल्लाह और उसके रसूल ﷺ की इच्छा के विपरीत है।

और हम मुक्त हैं इन्कार करने वालों के आचरण से जिन्होंने उन नुसूस को उस अर्थ से स्थगित कर दिया जो अर्थ अल्लाह और उसके रसूल ﷺ ने लिया है।

और हम मुक्त हैं उन ग़ुलू (अतिरंजन) करने वालों की शैली से जिन्होंने उन नुसूस को समानता के अर्थ में लिया है या कैफ़ियत बयान किया है।

हमें यक़ीनी तौर पर मालूम है कि जो कुछ अल्लाह की किताब तथा उसके नबी ﷺ की सुन्नत में मौजूद है वह सब

सत्य है, उनमें पारस्परिक संघर्ष नहीं है। इसलिए कि अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ ٱلْقُرْءَانَ ۚ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِندِ غَيْرِ ٱللَّهِ لَوَجَدُوا۟ فِيهِ ٱخْتِلَٰفًا كَثِيرًا﴾ [سورة النساء: ٨٢]

''भला यह लोग कुरआन में ग़ौर क्यों नहीं करते? यदि यह अल्लाह के अतिरिकत किसी और की ओर से होता तो इसमें बहुत ज़्यादा भिन्नता पाते।'' (सूरह निसाः ८२) और इसलिए भी कि ख़बरों में पारस्परिक संघर्ष से एक दुसरे का मिथ्या होना अवश्य हो जाता है जो अल्लाह और उसके रसूल ﷺ की ख़बर में असंभव है।

जो व्यक्ति यह दावा करे कि अल्लाह की किताब में या उसके रसूल ﷺ की सुन्नत में या उन दोनों में पारस्परिक टकराव है तो यह उसके कुधारणा तथा उसके दिल के वक्रता के कारण से है। इसलिए उसे चाहिए कि अल्लाह तआला से क्षमा याचना करे तथा टेढ़ी चाल चलने से सतर्कता बरते।

जो व्यक्ति इस भ्रम में है कि अल्लाह की किताब में या उसके रसूल ﷺ की सुन्नत में या उन दोनों में पारस्परिक टकराव है तो इसका कारण उसमें ज्ञान की कमी या समझने में असमर्थता अथवा ग़ौर व फ़िक्र में कुसूर है। अतः उसके लिए आवश्यक है कि ज्ञान की तलाश करे और ग़ौर व फ़िक्र में कोशिश करे ताकि सत्य स्पष्ट हो जाए। और अगर सत्य स्पष्ट न हो तो मामला उसके जानने वाले पर सौंप दे तथा अपने

भ्रम से रुक जाए और कहे जिस तरह पूर्ण एवं दृढ़ ज्ञान वाले कहते हैं:

﴿ءَامَنَّا بِهِۦ كُلٌّ مِّنۡ عِندِ رَبِّنَا﴾ [سورة آل عمران: ٧]

''हम उस पर ईमान लाये, यह सब कुछ हमारे प्रभु के यहाँ से आया है।'' (सूरह आले इमरानः ७) और जान ले कि न किताब में और न सुन्नत में और न इन दोनों के बीच कोई भिन्नता तथा टकराव है।

अध्यायः ३
फ़रिश्तों पर ईमान

हम अल्लाह तआला के फ़रिश्तों पर ईमान रखते हैं और यह कि वेः

﴿عِبَادٌ مُّكۡرَمُونَ ۝٢٦ لَا يَسۡبِقُونَهُۥ بِٱلۡقَوۡلِ وَهُم بِأَمۡرِهِۦ يَعۡمَلُونَ﴾

[سورة الأنبياء: ٢٦-٢٧]

''सम्मानित बन्दे हैं, उसके समक्ष बढ़कर नहीं बोलते, और उसके आदेशों पर कार्य करते हैं।'' (सूरह अम्बियाः २६-२७)

अल्लाह तआला ने उन्हें पैदा फरमाया तो वे उसकी उपासना में लग गए तथा उसकी आज्ञा पालन के लिए आत्म समर्पण कर दिए।

﴿لَا يَسۡتَكۡبِرُونَ عَنۡ عِبَادَتِهِۦ وَلَا يَسۡتَحۡسِرُونَ ۝١٩ يُسَبِّحُونَ ٱلَّيۡلَ وَٱلنَّهَارَ لَا يَفۡتُرُونَ﴾ [سورة الأنبياء: ١٩-٢٠]

''वे उसकी उपासना से न अहंकार करते हैं और न ही थकते हैं। दिन-रात उसकी पवित्रता वर्णन करते हैं और ज़रा सी भी सुस्ती नहीं करते।'' (सूरह अम्बियाः १९-२०)

अल्लाह तआला ने उन्हें हमारी नज़रों से ओझल रखा है, इसलिए हम उन्हें देख नहीं सकते। कभी कभी अल्लाह तआला अपने कुछ बन्दों के लिए उन्हें प्रकट भी कर देता है, जैसाकि नबी ﷺ ने जिब्रील عليه السلام को उनके असली रूप में देखा, उनके छः सौ पंख थे जो क्षितिज (उफुक़) को ढँपे हूये थे। और

जिब्रील عليه السلام मरयम अलैहस्सलाम के पास सम्पूर्ण आदमी का रूप धारण करके आये तो मरयम अलैहस्सलाम ने उनसे बातें कीं तथा उन्होंने उसका उत्तर दिया।

और प्यारे नबी ﷺ के पास सहाबा किराम मौजूद थे, उस अवसर पर जिब्रील عليه السلام मनुष्य का रूप धारण करके आप ﷺ के पास आये, जिनको कोई नहीं जानता था और न उन पर यात्रा का कोई प्रभाव दिखाई दे रहा था, कपड़े बिल्कुल उजले और बाल बिल्कुल काले थे। नबी ﷺ के आमने-सामने घुटना से घुटना मिलाकर बैठ गए और अपने दोनों हाथों को आपके दोनों रानों पर रखकर आपसे संबोधित हुए। नबी ﷺ ने उनके जाने के पश्चात अपने सहाबा को बताया कि वह जिब्रील عليه السلام थे।

और हमारा ईमान है कि फ़रिश्तों के ज़िम्मे कुछ काम लगाये गये हैं।

उनमें से एक जिब्रील عليه السلام हैं जिनको वहय का कार्यभार सौंपा गया है जिसे वह अल्लाह के पास से लाते हैं तथा अम्बिया एवं रसूलों में से जिस पर अल्लाह तआला चाहता है नाज़िल करते हैं।

तथा उनमें से एक मीकाईल عليه السلام जिनको वर्षा एवं वनस्पति (नबात) की ज़िम्मेदारी सौंपी गई है।

तथा एक इस्राफ़ील عليه السلام हैं जिनके ज़िम्मे क़ियामत आने पर पहले लोगों को बेहोशी के लिए फिर दोबारा ज़िन्दा करने के लिए सूर फूँकने का कार्यभार दिया गया है।

तथा एक मलकुल मौत हैं जिनके ज़िम्मे मृत्यु के समय प्राण निकालने का कार्यभार सौंपा गया है।

तथा एक मलकुल जिबाल हैं जिनके ज़िम्मे पहाड़ों का कार्यभार सौंपा गया है।

तथा उनमें से एक मालिक हैं जो जहन्नम का दारोगा है।

तथा कुछ फ़रिश्ते उनमें से माँ के पेट में बच्चों के कार्यों पर नियुक्त किये गये हैं तथा कुछ फ़रिश्ते आदम عليه السلام की संतान की रक्षा के लिए नियुक्त हैं।

तथा कुछ फ़रिश्तों के ज़िम्मे मनुष्य के कर्मों का लेखन क्रिया है। हरेक व्यक्ति पर दो दो फ़रिश्ते नियुक्त हैं।

﴿عَنِ ٱلْيَمِينِ وَعَنِ ٱلشِّمَالِ قَعِيدٌ ﴿١٧﴾ مَّا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ﴾ [سورة ق: ١٧-١٨]

''जो दायें-बायें बैठे हैं, उनकी (मनुष्य की) कोई बात ज़ुबान पर नहीं आती परन्तु रक्षक उसके पास लिखने को तैयार रहता है।'' (सूरह क़ाफ़: १७-१८)

उनमें से एक गिरोह मैयित से सवाल करने पर नियुक्त है। जब मैयित को मृत्यु के पश्चात अपने ठिकाने पर पहुँचा दिया जाता है तब उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं और उससे उसके प्रभु, उसके दीन तथा उसके नबी के संबंध में प्रश्न करते हैं तो:

﴿يُثَبِّتُ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ بِٱلْقَوْلِ ٱلثَّابِتِ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَفِى ٱلْـَٔاخِرَةِ ۖ وَيُضِلُّ ٱللَّهُ ٱلظَّـٰلِمِينَ ۚ وَيَفْعَلُ ٱللَّهُ مَا يَشَآءُ﴾ [سورة إبراهيم: ٢٧]

''अल्लाह तआला ईमानदारों को पक्की बात पर दृढ़ रखता है साँसारिक जीवन में भी तथा परलोकिक जीवन में भी। तथा अल्लाह तआला अन्याय करने वालों को भटका देता है। और अल्लाह तआला जो चाहता है करता है।'' (सूरह इब्राहीमः २७)

और उनमें से चंद फ़रिश्ते जन्नतियों के यहाँ नियुक्त हैं।

﴿وَٱلْمَلَـٰٓئِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِم مِّن كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾ سَلَـٰمٌ عَلَيْكُم بِمَا صَبَرْتُمْ ۚ فَنِعْمَ عُقْبَى ٱلدَّارِ﴾ [سورة الرعد: ٢٣-٢٤]

''हरेक द्वार से उनके पास आयेंगे और कहेंगे सलामती हो तुम पर तुम्हारे धैर्य के बदले, परलोकिक घर क्या ही अच्छा है।'' (सूरह रअ़दः २३-२४)

तथा प्यारे नबी ﷺ ने बताया कि आकाश में बैतुल मामूर है जिसमें रोज़ाना सत्तर हज़ार फ़रिश्ते प्रवेश करते हैं -एक रिवायत के अनुसार- उसमें नमाज़ पढ़ते हैं, और जो एकबार प्रवेश कर जाते हैं उनकी बारी दोबारा कभी नहीं आती।

अध्यायः ४
किताबों पर ईमान

हमारा ईमान है कि जगत पर हुज्जत क़ायम करने के लिए तथा अमल करने वालों के लिए रास्ता दिखाने के तौर पर अल्लाह तआला ने अपने रसूलों पर किताबें नाज़िल फरमाईं। पैग़म्बर इन किताबों के द्वारा लोगों को धर्म की शिक्षा देते तथा उनके दिलों की सफ़ाई करते थे।

और हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला ने हर रसूल के साथ एक किताब नाज़िल फरमाई। इसकी दलील अल्लाह तआला का यह फरमान हैः

﴿لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِٱلْبَيِّنَـٰتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ ٱلْكِتَـٰبَ وَٱلْمِيزَانَ لِيَقُومَ ٱلنَّاسُ بِٱلْقِسْطِ﴾ [سورة الحديد: ٢٥]

“निःसंदेह हमने अपने पैग़म्बरों को खुली निशानी देकर भेजा और उन पर किताब तथा न्याय (तुला) नाज़िल की ताकि लोग न्याय पर क़ायम रहें।” (सूरह हदीदः २५)

तथा हमें उनमें से निम्नलिखित किताबों का ज्ञान हैः

१- **तौरातः** जिसे अल्लाह तआला ने मूसा عليه السلام पर नाज़िल किया और यह किताब बनी इस्राईल में सबसे मुख्य किताब थी।

﴿إِنَّآ أَنزَلْنَا ٱلتَّوْرَىٰةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا ٱلنَّبِيُّونَ ٱلَّذِينَ أَسْلَمُوا۟ لِلَّذِينَ هَادُوا۟ وَٱلرَّبَّـٰنِيُّونَ وَٱلْأَحْبَارُ بِمَا ٱسْتُحْفِظُوا۟ مِن كِتَـٰبِ ٱللَّهِ وَكَانُوا۟ عَلَيْهِ شُهَدَآءَ﴾ [سورة المائدة: ٤٤]

''हमने नाज़िल किया तौरात को जिस में मार्गदर्शन एवं ज्योति है, यहूदियों में इसी तौरात के साथ अल्लाह तआला के मानने वाले अम्बिया (अलैहिमुस्सलाम) और अल्लाह वाले और उलमा फ़ैसले करते थे, क्योंकि उन्हें अल्लाह की इस किताब की रक्षा करने का आदेश दिया गया था और वह इस पर गवाह थे।'' (सूरह माइदाः ४४)

२- **इंजीलः** जिसे अल्लाह तआला ने ईसा عليه السلام पर नाज़िल किया और वह तौरात की पुष्टि करने वाली एवं सम्पूरक थी।

﴿وَءَاتَيْنَـٰهُ ٱلْإِنجِيلَ فِيهِ هُدًى وَنُورٌ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ ٱلتَّوْرَىٰةِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ﴾ [سورة المائدة: ٤٦]

''और हमने उनको (ईसा अलैहिस्सलाम को) इंजील प्रदान की जिसमें मार्गदर्शन एवं ज्योति है तथा वह अपने से पूर्व किताब तौरात की पुष्टि करती है तथा वह परहेज़गारों (संयमियों) के लिए मार्गदर्शन एवं सदुपदेश है।'' (सूरा माइदाः ४६)

﴿وَلِأُحِلَّ لَكُم بَعْضَ ٱلَّذِى حُرِّمَ عَلَيْكُمْ﴾ [سورة آل عمران: ٥٠]

''और मैं इस लिए भी आया हूँ कि कुछ चीज़ें जो तुम पर हराम कर दी गई थीं तुम्हारे लिए हलाल कर दूँ।'' (सूरह आले इमरानः ५०)

३- **ज़बूरः** जिसे अल्लाह तआला ने दाऊद عليه السلام पर उतारा।

४- **इब्राहीम عليه السلام और मूसा عليه السلام के सहीफ़े।**

५- **कुरआन मजीदः** जिसे अल्लाह तआला ने अपने

आख़िरी नबी मुहम्मद ﷺ पर नाज़िल किया।

﴿هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَٰتٍ مِّنَ ٱلۡهُدَىٰ وَٱلۡفُرۡقَانِۚ﴾ [سورة البقرة: ١٨٥]

‘‘जो लोगों के लिए मार्गदर्शन है तथा इसमें मार्गदर्शन की निशानियाँ हैं एवं सत्य तथा असत्य में अंतर करने वाला है।’’ (सूरह बक़रहः १८५)

﴿مُصَدِّقًا لِّمَا بَيۡنَ يَدَيۡهِ مِنَ ٱلۡكِتَٰبِ وَمُهَيۡمِنًا عَلَيۡهِۖ﴾ [سورة المائدة: ٤٨]

‘‘जो अपने से पूर्व की किताबों की पुष्टि करने वाली है तथा उन सब का रक्षक है।’’ (सूरह माइदाः ४८)

अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुरआन के द्वारा पिछली तमाम किताबों को मनूसूख़ (रहित) कर दिया तथा उसे खेलवाड़ों के खेल से एवं फेर-बदल करने वालों के वक्रता से सुरक्षित रखने की ज़िम्मेदारी स्वयं लिया है।

﴿إِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا ٱلذِّكۡرَ وَإِنَّا لَهُۥ لَحَٰفِظُونَ﴾ [سورة الحجر: ٩]

‘‘निःसंदेह हमने ही इस क़ुरआन को उतारा है तथा हम ही इसके रक्षक हैं।’’ (सूरह हिज्रः ९) क्योंकि वह क़ियामत तक तमाम सृष्टि पर हुज्जत बनकर बाक़ी रहेगा।

जहाँ तक पिछली आसमानी किताबों का संबंध है तो वह एक निर्धारित समय तक के लिए थीं और वह उस समय तक बाक़ी रहती थीं जब तक उन्हें मनूसूख़ करने वाली तथा उनमें हासिल होने वाले फेर-बदल को स्पष्ट करने वाली किताब न आ जाती थी। इसी लिए (पवित्र क़ुरआन से पूर्व की) कोई किताब फेर-बदल, ज़्यादती तथा कमी से सुरक्षित न रह सकी।

﴿مِّنَ ٱلَّذِينَ هَادُواْ يُحَرِّفُونَ ٱلْكَلِمَ عَن مَّوَاضِعِهِۦ﴾ [سورة النساء: ٤٦]

''यहूदियों में से कुछ ऐसे हैं जो कलिमात को उसके उचित स्थान से उलट-फेर कर देते हैं।'' (सूरह निसाः ४६)

﴿فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ يَكْتُبُونَ ٱلْكِتَٰبَ بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ يَقُولُونَ هَٰذَا مِنْ عِندِ ٱللَّهِ لِيَشْتَرُواْ بِهِۦ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ فَوَيْلٌ لَّهُم مِّمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُم مِّمَّا يَكْسِبُونَ﴾ [سورة البقرة: ٧٩]

''उन लोगों के लिए सर्वनाश है जो अपने हाथों की लिखी हुई किताब को अल्लाह तआला की ओर की कहते हैं और इस प्रकार दुनिया कमाते हैं, उनके हाथों की लिखाई को और उनकी कमाई को बर्बादी और अफ़सोस है।'' (सूरह बक़रहः ७६)

﴿قُلْ مَنْ أَنزَلَ ٱلْكِتَٰبَ ٱلَّذِى جَآءَ بِهِۦ مُوسَىٰ نُورًا وَهُدًى لِّلنَّاسِ ۖ تَجْعَلُونَهُۥ قَرَاطِيسَ تُبْدُونَهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا﴾ [سورة الأنعام: ٩١]

''कह दीजिए कि वह किताब किसने नाज़िल की है जिसको मूसा (عليه السلام) लाये थे जो लोगों के लिए प्रकाश तथा मार्गदर्शक है, जिसे तुमने उन अलग अलग पेपरों में रख छोड़ा है जिनको व्यक्त करते हो और बहुत सी बातों को छिपाते हो।'' (सूरह अनआ़मः ६१)

﴿وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلْوُۥنَ أَلْسِنَتَهُم بِٱلْكِتَٰبِ لِتَحْسَبُوهُ مِنَ ٱلْكِتَٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ ٱلْكِتَٰبِ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِندِ ٱللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِندِ ٱللَّهِ

وَيَقُولُونَ عَلَى ٱللَّهِ ٱلْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٨﴾ مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَن يُؤْتِيَهُ ٱللَّهُ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْحُكْمَ وَٱلنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا۟ عِبَادًا لِّى مِن دُونِ ٱللَّهِ﴾

[سورة آل عمران: ٧٨-٧٩]

''अवश्व उनमें से ऐसा गिरोह भी है जो किताब पढ़ते हुए अपनी जीभ मरोड़ लेता है, ताकि तुम उसको किताब ही का लेख समझो, हालाँकि (वास्तव में) वह किताब में से नहीं, और यह कहते भी हैं कि वह अल्लाह की ओर से है, हालाँकि वह अल्लाह की ओर से नहीं, वह तो जान बूझ कर अल्लाह पर झूठ बोलते हैं। किसी ऐसे पुरुष को जिसे अल्लाह किताब, विज्ञान और नबूअत प्रदान करे, यह उचित नहीं कि फिर भी वह लोगों से कहे कि अल्लाह को छोड़कर मेरे भक्त बन जाओ।'' (सूरह आले इमरानः ७८-७६)

﴿يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِّمَّا كُنتُمْ تُخْفُونَ مِنَ ٱلْكِتَٰبِ وَيَعْفُوا۟ عَن كَثِيرٍ ۚ قَدْ جَآءَكُم مِّنَ ٱللَّهِ نُورٌ وَكِتَٰبٌ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾ يَهْدِى بِهِ ٱللَّهُ مَنِ ٱتَّبَعَ رِضْوَٰنَهُۥ سُبُلَ ٱلسَّلَٰمِ وَيُخْرِجُهُم مِّنَ ٱلظُّلُمَٰتِ إِلَى ٱلنُّورِ بِإِذْنِهِۦ وَيَهْدِيهِمْ إِلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٦﴾ لَّقَدْ كَفَرَ ٱلَّذِينَ قَالُوٓا۟ إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْمَسِيحُ ٱبْنُ مَرْيَمَ﴾ [سورة المائدة: ١٥-١٧]

''हे अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद ﷺ) आ

गये जो बहुत सी वह बातें बता रहे हैं जो किताब (तौरात तथा इंजील) की बातें तुम छुपा रहे थे तथा बहुत सी बातों को छोड़ रहे हैं, तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से ज्योति तथा खुली किताब (पवित्र कुरआन) आ चुकी है। जिसके द्वारा अल्लाह उन्हें शान्ति का पथ दिखाता है जो उसकी प्रसन्नता का अनुकरण करें तथा उन्हें अंधकार से अपनी कृपा से प्रकाश की ओर निकाल लाता है तथा उन्हें सीधा मार्ग दर्शाता है। निःसंदेह वह लोग काफ़िर हो गये जिन्होंने कहा कि मरयम का पुत्र मसीह अल्लाह है।" (सूरह माइदाः १५-१७)

अध्यायः ५
रसूलों पर ईमान

हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला ने अपने सृष्टि की ओर रसूलों को भेजा।

﴿رُّسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى ٱللَّهِ حُجَّةُۢ بَعْدَ ٱلرُّسُلِۚ وَكَانَ ٱللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا﴾ [سورة النساء: ١٦٥]

''शुभसूचक एवं सचेतकर्ता रसूल बनाकर भेजा ताकि लोगों को कोई बहाना एवं अभियोग रसूलों के (भेजने के) पश्चात न रह जाये, तथा अल्लाह तआला शक्तिमान एवं पूर्णज्ञानी है।'' (सूरह निसाः १६५)

और हमारा ईमान है कि सबसे प्रथम रसूल नूह عليه السلام हैं तथा अन्तिम रसूल मुहम्मद ﷺ हैं।

﴿إِنَّآ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ كَمَآ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ نُوحٍ وَٱلنَّبِيِّـۧنَ مِنۢ بَعْدِهِۦ﴾ [سورة النساء: ١٦٣]

''हमने आपकी ओर उसी प्रकार वह्य भेजी जिस प्रकार नूह एवं उनके बाद के नबियों पर भेजी थी।'' (सूरह निसाः १६३)

﴿مَّا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَآ أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِن رَّسُولَ ٱللَّهِ وَخَاتَمَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ﴾ [سورة الأحزاب: ٤٠]

''मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं बल्कि अल्लाह के रसूल तथा समस्त नबियों में अन्तिम हैं।'' (सूरह अहज़ाबः ४०)

और हमारा ईमान है कि उनमें सबसे अफ़ज़ल (सर्वश्रेष्ठ) मुहम्मद ﷺ हैं, फिर इब्राहीम عليه السلام, फिर मूसा عليه السلام, फिर नूह عليه السلام एवं ईसा बिन मरयम عليه السلام हैं, तथा इन्हीं पाँच रसूलों का विशेष रूप से इस आयत में वर्णन है:

﴿وَإِذۡ أَخَذۡنَا مِنَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ مِيثَـٰقَهُمۡ وَمِنكَ وَمِن نُّوحٖ وَإِبۡرَٰهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ٱبۡنِ مَرۡيَمَۖ وَأَخَذۡنَا مِنۡهُم مِّيثَـٰقًا غَلِيظٗا﴾ [سورة الأحزاب: ٧]

''और जब हमने समस्त नबियों से वचन लिया तथा आप से तथा नूह से तथा इब्राहीम से तथा मूसा से तथा मरयम के पुत्र ईसा से, और हमने उनसे पक्का वचन लिया।'' (सूरह अहज़ाबः ७)

और हमारा अक़ीदा है कि मर्यादा के साथ विशेषित उल्लिखित रसूलों की शरीअ़तों के फ़ज़ायल को मुहम्मद ﷺ की शरीअ़त व्याप्त है। अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿شَرَعَ لَكُم مِّنَ ٱلدِّينِ مَا وَصَّىٰ بِهِۦ نُوحٗا وَٱلَّذِيٓ أَوۡحَيۡنَآ إِلَيۡكَ وَمَا وَصَّيۡنَا بِهِۦٓ إِبۡرَٰهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَىٰٓۖ أَنۡ أَقِيمُواْ ٱلدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُواْ فِيهِۚ﴾

[سورة الشورى: ١٣]

''अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए वही धर्म निर्धारित कर दिया है जिसको स्थापित करने का उसने नूह (عليه السلام) को आदेश दिया था, और जो (प्रकाशना के द्वारा) हमने तेरी ओर भेज दिया है तथा जिसका विशेष आदेश हमने इब्राहीम तथा मूसा एवं ईसा (अलैहिमुस्सलाम) को दिया था कि धर्म को स्थापित रखना तथा इसमें फूट न डालना।'' (सूरह शूराः १३)

और हमारा ईमान है कि सभी रसूल मनुष्य तथा सृष्टि थे, रुबूबियत (इश्वरियता) की विशेषताओं में से कुछ भी उनमें नहीं पाई जाती थी। अल्लाह तआला ने प्रथम रसूल नूह ﷺ की ओर से संबोधन कियाः

﴿وَلَآ أَقُولُ لَكُمۡ عِندِي خَزَآئِنُ ٱللَّهِ وَلَآ أَعۡلَمُ ٱلۡغَيۡبَ وَلَآ أَقُولُ إِنِّي مَلَكٞ﴾ [سورة هود: ٣١]

''न तो मैं तुमसे यह कहता हूँ कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न ही यह कि मैं परोक्ष जानता हूँ और न ही यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ।'' (सूरह हूदः ३१) तथा अल्लाह तआला ने अन्तिम रसूल मुहम्मद ﷺ को आदेश दिया कि वह लोगों से कह देंः

﴿لَّآ أَقُولُ لَكُمۡ عِندِي خَزَآئِنُ ٱللَّهِ وَلَآ أَعۡلَمُ ٱلۡغَيۡبَ وَلَآ أَقُولُ لَكُمۡ إِنِّي مَلَكٌ﴾ [سورة الأنعام: ٥٠]

''न तो मैं तुमसे यह कहता हूँ कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न ही यह कि मैं परोक्ष जानता हूँ और न ही यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ।'' (सूरह अनआ़मः ५०) और यह भी कह देंः

﴿لَّآ أَمۡلِكُ لِنَفۡسِي نَفۡعٗا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَآءَ ٱللَّهُ﴾ [سورة الأعراف: ١٨٨]

''मैं स्वयं अपने नफ़्स के लिए किसी लाभ का अधिकार नहीं रखता और न किसी हानी का, किन्तु इतना ही जितना कि अल्लाह तआला ने चाहा हो।'' (सूरह अअ़्राफ़ः १८८) और यह भी

कह दें:

﴿إِنِّي لَآ أَمۡلِكُ لَكُمۡ ضَرّٗا وَلَا رَشَدٗا ۝٢١ قُلۡ إِنِّي لَن يُجِيرَنِي مِنَ ٱللَّهِ أَحَدٞ وَلَنۡ أَجِدَ مِن دُونِهِۦ مُلۡتَحَدًا ۝٢٢﴾ [سورة الجن: ٢١-٢٢]

''निःसंदेह मैं तुम्हारे लिए किसी लाभ-हानी का अधिकार नहीं रखता, यह भी कह दीजिए कि मुझे कदापि कोई अल्लाह से नहीं बचा सकता तथा मैं कदापि उसके अतिरिक्त किसी और से शरण का स्थान नहीं पा सकता।'' (सूरह जिन्नः २१-२२)

और हमारा ईमान है कि सभी रसूल अल्लाह के बंदों तथा दासों में से थे, अल्लाह ने उन्हें रिसालत (दूतत्व) से सम्मानित किया और उन्हें दासत्व के विशेषण से विशेषित किया उनके मर्यादा के सर्वोच्च स्थानों तथा उनकी प्रशंसा के प्रसंग (सियाक़) में। अल्लाह तआला ने प्रथम दूत नूह عليه السلام के संबंध में फरमायाः

﴿ذُرِّيَّةَ مَنۡ حَمَلۡنَا مَعَ نُوحٍۚ إِنَّهُۥ كَانَ عَبۡدٗا شَكُورٗا﴾ [سورة الإسراء: ٣]

''ऐ उन लोगों की संतान जिनको हमने नूह (عليه السلام) के साथ (नाव में) सवार किया था, निःसंदेह वह अत्यधिक कृतज्ञ भक्त था।'' (सूरह इसराः ३) और सबसे अन्तिम रसूल मुहम्मद ﷺ के संबंध में फरमायाः

﴿تَبَارَكَ ٱلَّذِي نَزَّلَ ٱلۡفُرۡقَانَ عَلَىٰ عَبۡدِهِۦ لِيَكُونَ لِلۡعَٰلَمِينَ نَذِيرًا﴾

[سورة الفرقان: ١]

''अत्यन्त शुभ है वह (अल्लाह तआला) जिसने अपने भक्त पर

फ़ुरक़ान (क़ुरआन) अवतरित किया ताकि वह जगत के लिए सतर्क करने वाला बन जाये।'' (सूरह फ़ुरक़ानः १) तथा अन्य रसूलों के संबंध में फरमायाः

﴿وَٱذْكُرْ عِبَـٰدَنَآ إِبْرَٰهِيمَ وَإِسْحَـٰقَ وَيَعْقُوبَ أُو۟لِى ٱلْأَيْدِى وَٱلْأَبْصَـٰرِ﴾

[سورة ص: ٤٥]

''तथा हमारे भक्तों इब्राहीम, इसहाक़ एवं याक़ूब को भी याद करो जो हाथों एवं आँखों वाले थे।'' (सूरह सादः ४५)

﴿وَٱذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُۥدَ ذَا ٱلْأَيْدِ ۖ إِنَّهُۥٓ أَوَّابٌ﴾ [سورة ص: ١٧]

''तथा हमारे भक्त दाऊद (عليه السلام) को याद करें जो अत्यन्त शक्तिशाली थे, निःसंदेह वह बहुत ध्यानमग्न थे।'' (सूरह सादः १७)

﴿وَوَهَبْنَا لِدَاوُۥدَ سُلَيْمَـٰنَ ۚ نِعْمَ ٱلْعَبْدُ ۖ إِنَّهُۥٓ أَوَّابٌ﴾ [سورة ص: ٣٠]

''तथा हमने दाऊद (عليه السلام) को सुलैमान नामी पुत्र प्रदान किया जो अति उत्तम भक्त था तथा अत्यधिक ध्यान लगाने वाला था।'' (सूरह सादः ३०) और मरयम के पुत्र ईसा عليه السلام के संबंध में फरमायाः

﴿إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَـٰهُ مَثَلًا لِّبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ﴾ [سورة الزخرف: ٥٩]

''वह तो हमारे ऐसे भक्त थे जिन पर हमने उपकार किया तथा उसे बनी इस्राईल के लिए निशानी बनाया।'' (सूरह ज़ुख़रुफ़ः ५९)

और हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला ने मुहम्मद ﷺ पर दूतत्व का सिलसिला समाप्त कर दिया तथा आपको सम्पूर्ण

मानवता के लिए रसूल बना कर भेजा। अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿قُلْ يَـٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنِّى رَسُولُ ٱللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا ٱلَّذِى لَهُۥ مُلْكُ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ لَآ إِلَـٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْىِۦ وَيُمِيتُ ۖ فَـَٔامِنُوا۟ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِ ٱلنَّبِىِّ ٱلْأُمِّىِّ ٱلَّذِى يُؤْمِنُ بِٱللَّهِ وَكَلِمَـٰتِهِۦ وَٱتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ﴾ [سورة الأعراف: ١٥٨]

''आप कह दीजिए कि ऐ लोगो! मैं तुम सब की ओर अल्लाह का भेजा हुआ हूँ (अर्थात उसका रसूल हूँ) जिसके लिए आकाशों एवं धरती की राजत्य है, उसके अतिरिक्त कोई भी उपासना के योग्य नहीं, वही जीवन प्रदान करता है तथा वही मृत्यु देता है, इसलिए अल्लाह पर तथा उसके उम्मी (निरक्षर, अनपढ़) दूत पर जो अल्लाह और उसके सभी कलाम (आदेशों) पर ईमान रखते हैं, उनका अनुसरण करो ताकि तुम सत्य मार्ग पर आ जाओ।'' (सूरह अअ्राफ़: १५८)

और हमारा ईमान है कि मुहम्मद ﷺ की शरीअ़त ही दीने इस्लाम (इस्लाम धर्म) है, जिसे अल्लाह तआला ने अपने बंदों के लिए पसंद फरमाया। अतः किसी से इस दीन के अतिरिक्त कोई दीन क़बूल नहीं करेगा। अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿إِنَّ ٱلدِّينَ عِندَ ٱللَّهِ ٱلْإِسْلَـٰمُ﴾ [سورة آل عمران: ١٩]

''निःसंदेह अल्लाह के पास इस्लाम धर्म ही है।'' (सूरह आले इमरान: १६)

﴿ٱلۡيَوۡمَ أَكۡمَلۡتُ لَكُمۡ دِينَكُمۡ وَأَتۡمَمۡتُ عَلَيۡكُمۡ نِعۡمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلۡإِسۡلَٰمَ دِينٗا﴾ [سورة المائدة: ٣]

''आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को पूरा कर दिया तथा तुम पर अपनी अनुकम्पा पूरी कर दी तथा तुम्हारे लिए इस्लाम धर्म को पसंद कर लिया।'' (सूरह माइदाः ३)

﴿وَمَن يَبۡتَغِ غَيۡرَ ٱلۡإِسۡلَٰمِ دِينٗا فَلَن يُقۡبَلَ مِنۡهُ وَهُوَ فِي ٱلۡأٓخِرَةِ مِنَ ٱلۡخَٰسِرِينَ﴾ [سورة آل عمران: ٨٥]

''तथा जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म की खोज करे उसका धर्म कदापि मान्य नहीं होगा तथा वह परलोक में क्षतिग्रस्तों में होगा।'' (सूरह आले इमरानः ८५)

और हमारा अक़ीदा है कि जो इस्लाम धर्म के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म जैसे यहूदियत तथा नसरानियत आदि को स्वीकार योग्य समझे तो वह काफ़िर है। उसे तौबा करने के लिए कहा जायेगा, यदि वह तौबा कर ले तो ठीक है नहीं तो धर्मत्यागी होने के कारण क़त्ल किया जायेगा, क्योंकि वह कुरआन को झुठलाने वाला है।

और हमारा यह भी अक़ीदा है कि जिस व्यक्ति ने मुहम्मद ﷺ की रिसालत या उनके सम्पूर्ण मानवता के लिए दूत होने का इन्कार किया तो उसने सभी रसूलों के साथ कुफ़्र किया, यहाँ तक कि उस रसूल का भी जिसके अनुकरण तथा जिस पर ईमान का उसे दावा है। क्योंकि अल्लाह ने फरमायाः

﴿كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ ٱلْمُرْسَلِينَ﴾ [سورة الشعراء: ١٠٥]

''नूह (عليه السلام) की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया।'' (सूरह शुअ़राः १०५) इस पवित्र आयत में उन्हें सारे रसूलों को झुठलाने वाला ठहराया हालाँकि नूह عليه السلام से पूर्व कोई रसूल नहीं गुज़रा। अल्लाह तआला ने दूसरी जगह फरमायाः

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِٱللَّهِ وَرُسُلِهِۦ وَيُرِيدُونَ أَن يُفَرِّقُوا۟ بَيْنَ ٱللَّهِ وَرُسُلِهِۦ وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَن يَتَّخِذُوا۟ بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ﴿١٥٠﴾ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْكَٰفِرُونَ حَقًّا ۚ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَٰفِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿١٥١﴾﴾ [سورة النساء: ١٥٠-١٥١]

''जो लोग अल्लाह तथा उसके रसूलों के प्रति अविश्वास रखते हैं और चाहते हैं अल्लाह तथा उसके रसूलों के मध्य अलगाव करें तथा कहते हैं कि हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते तथा इसके बीच रास्ता बनाना चाहते हैं। विश्वास करो कि यह सभी लोग असली काफ़िर हैं, और काफ़िरों के लिए हमने अत्यधिक कठोर यातनायें तैयार कर रखी हैं।'' (सूरह निसाः १५०-१५१)

और हम ईमान रखते हैं कि मुहम्मद ﷺ के पश्चात कोई नबी नहीं। अतः आप ﷺ के बाद जिस किसी ने नबूअत का दावा किया या नबूअत के दावेदार की पुष्टि की तो वह काफ़िर है। क्योंकि वह अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ एवं मुसलमानों के इजमा (एकमत) को झुठलाने वाला है।

और हम ईमान रखते हैं कि आपके नेक ख़लीफ़े (ख़ुलफ़ाये राशेदीन) हैं जो ज्ञान, दअ़्वत तथा मोमिनों पर शासन करने हेतु आप ﷺ की उम्मत में आपके जानशीन बने। और हम इस पर भी ईमान रखते हैं कि ख़ुलफ़ा में सबसे अफ़ज़ल और ख़िलाफ़त का सबसे ज़्यादा अधिकारी अबू बक्र ؓ हैं, फिर उमर बिन ख़त्ताब ؓ, फिर उसमान बिन अफ़्फ़ान, फिर अ़ली बिन अबी तालिब ؓ हैं।

मर्यादा में जिस तरह उनकी तरतीब रही उसी क्रमानुसार वह ख़िलाफ़त के अधिकारी भी हुए। अल्लाह तआला का कोई काम हिक्मत से ख़ाली नहीं होता। इसलिए उसकी शान से यह बात बहुत परे है कि वह ख़ैरुल क़ुरून (सबसे उत्तम ज़माना) में किसी उत्तम तथा ख़िलाफ़त के अधिक अधिकार रखने वाले व्यक्ति की उपस्थिति में किसी अन्य व्यक्ति को मुसलमानों पर आच्छादित करता।

और हमारा ईमान है कि उपरोक्त ख़ुलफ़ा में मफ़ज़ूल (अपेक्षाकृत मर्यादा में कम) ख़लीफ़ा में ऐसी वैशिष्ट पाई जा सकती है जिसमें वह अपने से अफ़ज़ल से श्रेष्ठ हो, लेकिन इसका यह अर्थ कदापी नहीं है कि वह अपने से अफ़ज़ल ख़लीफ़ा से हर विषय में प्रधानता रखते हैं, क्योंकि प्रधानता के कारण अनेक तथा विभिन्न प्रकार हैं।

और हमारा ईमान है कि यह उम्मत अन्य उम्मतों से उत्तम है तथा अल्लाह के यहाँ इनकी इ़ज़्ज़त एवं प्रतिष्ठा अधिक है। अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿كُنتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِٱلْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ ٱلْمُنكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِٱللَّهِ﴾ [سورة آل عمران: ١١٠]

“तुम सर्वश्रेष्ठ उम्मत हो जो लोगों के लिए पैदा की गई है कि तुम सत्कर्मों का आदेश देते हो और कुकर्मों से रोकते हो और अल्लात तआला पर ईमान रखते हो।” (सूरह आले इमरानः ११०) और हम ईमान रखते हैं कि उम्मत में सबसे उत्तम सहाबा किराम ﷺ थे, फिर ताबेईन और फिर तबा ताबेईन रहेमहुमुल्लाह।

और हमारा ईमान है कि इस उम्मत में से एक जमाअ़त विजयी बनकर सदैव सत्य पर स्थिर रहेगी। उनका विरोध करने वाला या उन्हें रुसवा करने वाला कोई व्यक्ति उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म आ जाये।

सहाबा किराम ﷺ के बीच जो मतभेद हुए उनके संबंध में हमारा विश्वास यह है कि वह इजतिहादी मतभेद थे। अतः उनमें से जो सही दिशा को पहुँच गये उनके लिए डबल अज्र है और उनमें से जो सही दिशा को नहीं पहुँच पाये उनके लिए एक अज्र है तथा उनकी भूल क्षमायोग्य है।

हमें इस पर भी विश्वास है कि उनकी अप्रिय बातों पर आलोचना करने से पूर्णतः बचना अनिवार्य है, केवल उनकी उत्तम बातों की प्रशंसा करनी चाहिए जिसके वह अधिकारी हैं। तथा उनमें से हरेक के संबंध में हमें अपने दिलों को वैर एवं कपट से पवित्र रखना चाहिए क्योंकि उनकी शान में अल्लाह तआला का कथन हैः

﴿لَا يَسْتَوِي مِنكُم مَّنْ أَنفَقَ مِن قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ ۚ أُولَٰئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِينَ أَنفَقُوا مِن بَعْدُ وَقَاتَلُوا ۚ وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ﴾ [سورة الحديد: ١٠]

''तुम में से जिन लोगों ने विजय से पूर्व अल्लाह के मार्ग में ख़र्च किया है तथा धर्मयुद्ध किया है वह (दूसरों के) समतुल्य नहीं, अपितु उनसे अत्यन्त उच्च पद के हैं जिन्होंने विजय के पश्चात दान किया तथा धर्मयुद्ध किया। हाँ, भलाई का वचन तो अल्लाह तआला का उन सबसे है।'' (सूरह हदीदः १०)

तथा हमारे संबंध में अल्लाह तआला का कथन हैः

﴿وَالَّذِينَ جَاءُوا مِن بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِّلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ﴾ [سورة الحشر: ١٠]

''तथा (उनके लिए) जो उनके पश्चात आयें, जो कहेंगे कि हे हमारे प्रभु! हमें क्षमा कर दे तथा हमारे उन भाईयों को भी जो हमसे पूर्व ईमान ला चुके हैं तथा ईमान वालों की ओर से हमारे हृदय में कपट (एवं शत्रुता) न डाल, हे हमारे प्रभु! निःसंदेह तू प्रेम एवं दया करने वाला है।'' (सूरह हश्रः १०)

अध्यायः ६

क़ियामत (महाप्रलय) पर ईमान

हमारा ईमान आख़िरत के दिन पर है जो क़ियामत का दिन है जिसके पश्चात कोई दिन नहीं, जब अल्लाह तआला लोगों को दोबारा जीवित करके उठायेगा, फिर या तो वे सदैव के लिए स्वर्ग में रहेंगे जहाँ अच्छी अच्छी चीज़ें होंगी या नरक में जहाँ कठोर यातनायें हैं।

हमारा ईमान मृत्यु के पश्चात मुर्दों को जीवित किये जाने पर है अर्थात इस्राफील عليه السلام जब दोबारा सूर फूँकेंगे तो अल्लाह तआला तमाम मुर्दों को जीवित कर देगा।

﴿وَنُفِخَ فِي ٱلصُّورِ فَصَعِقَ مَن فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَن فِي ٱلْأَرْضِ إِلَّا مَن شَآءَ ٱللَّهُ ۖ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنظُرُونَ﴾ [سورة الزمر: ٦٨]

"तथा जब नरसिंहा (सूर) फूँक दिया जायेगा तो जो लोग आकाशों एवं धरती में हैं सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे परन्तु वह जिसे अल्लाह चाहे, फिर पुनः नरसिंहा फूँका जायेगा तो सब तुरन्त खड़े होकर देखने लग जायेंगे।" (सूरह ज़ुमरः ६८)

अब लोग अपनी अपनी क़ब्रों से उठकर संसार के प्रभु की ओर जायेंगे, उस समय वह नंगे पाँव बिना जूतों के, नंगे बदन बिना कपड़ों के एवं बिना ख़तनों के होंगे।

﴿كَمَا بَدَأْنَآ أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيدُهُۥ ۚ وَعْدًا عَلَيْنَآ ۚ إِنَّا كُنَّا فَٰعِلِينَ﴾ [سورة الأنبياء: ١٠٤]

"जिस प्रकार हमने (संसार को) पहले पैदा किया था उसी प्रकार दोबारा पैदा कर देंगे, यह हमारा वादा है, हम ऐसा अवश्य करने वाले हैं।" (सूरह अम्बियाः १०४)

और हमारा ईमान नामए-आमाल (कर्मपत्र) पर भी है कि वह दायें हाथ में दिया जायेगा या पीछे की ओर से बायें हाथ में।

﴿فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَـٰبَهُۥ بِيَمِينِهِۦ ۝٧ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ۝٨ وَيَنقَلِبُ إِلَىٰٓ أَهْلِهِۦ مَسْرُورًا ۝٩ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَـٰبَهُۥ وَرَآءَ ظَهْرِهِۦ ۝١٠ فَسَوْفَ يَدْعُوا۟ ثُبُورًا ۝١١ وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا﴾ [سورة الانشقاق: ٧-١٢]

"तो जिसका कर्मपत्र उसके दायें हाथ में दिया जायेगा उससे सरल हिसाब लिया जायेगा तथा अपने घरवालों में प्रसन्न होकर लौटेगा। तथा जिसका कर्मपत्र पीठ के पीछे से दिया जायेगा तो वह मृत्यु को पुकारेगा तथा भड़कती हुई आग में डाल दिया जायेगा।" (सूरह इन्शिक़ाक़ः ७-१२)

﴿وَكُلَّ إِنسَـٰنٍ أَلْزَمْنَـٰهُ طَـٰٓئِرَهُۥ فِى عُنُقِهِۦ ۖ وَنُخْرِجُ لَهُۥ يَوْمَ ٱلْقِيَـٰمَةِ كِتَـٰبًا يَلْقَىٰهُ مَنشُورًا ۝١٣ ٱقْرَأْ كِتَـٰبَكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ ٱلْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا﴾ [سورة الإسراء: ١٣-١٤]

"तथा हमने हरेक मनुष्य के भाग्य को उसके गले में डाल दिया है तथा महाप्रलय के दिन हम उसके कर्मपत्र को निकालेंगे जिसे वह अपने ऊपर खुला हुआ देखेगा। लो स्वयं ही अपना कर्मपत्र पढ़ लो। आज तो तू स्वयं ही अपना निर्णय करने को काफ़ी

है। (सूरह इसराः १३-१४)

तथा हम तुले (मवाज़ीन) पर भी ईमान रखते हैं जो क़ियामत के दिन स्थापित किये जायेंगे फिर किसी पर कोई अत्याचार नहीं होगा।

﴿فَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُۥ ۝٧ وَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُۥ﴾ [سورة الزلزلة: ٧-٨]

''तो जिसने कण भर भी नेकी की होगी वह उसको देख लेगा तथा जिसने कण भर भी बुराई की होगी वह उसे देख लेगा।'' (सूरह ज़लज़लाः ७-८)

﴿فَمَن ثَقُلَتْ مَوَٰزِينُهُۥ فَأُو۟لَـٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ۝١٠٢ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَٰزِينُهُۥ فَأُو۟لَـٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ خَسِرُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ فِى جَهَنَّمَ خَـٰلِدُونَ ۝١٠٣ تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ ٱلنَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَـٰلِحُونَ﴾ [سورة المؤمنون: ١٠٢-١٠٤]

''जिनकी तराजू का पलड़ा भारी हो गया वे तो मोक्ष प्राप्त करने वाले हो गये। तथा जिनकी तराजू का पलड़ा हल्का रह गया ये हैं वे जिन्होंने अपनी हानी स्वयं कर ली, जो सदैव के लिए नरक में चले गये। उनके मुखों को आग झुलसाती रहेगी, वे वहाँ कुरूप बने हुये होंगे।'' (सूरह मोमेनूनः १०२-१०४)

﴿مَن جَآءَ بِٱلْحَسَنَةِ فَلَهُۥ عَشْرُ أَمْثَالِهَا ۖ وَمَن جَآءَ بِٱلسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَىٰٓ إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ﴾ [سورة الأنعام: ١٦٠]

''जो व्यक्ति पुण्य का कार्य करेगा उसे उसके दस गुना मिलेंगे।

तथा जो कुकर्म करेगा उसे उसके समान दण्ड मिलेगा, तथा उन लोगों पर अत्याचार न होगा।" (सूरह अनआ़मः १६०)

हम सुमहान अभिस्ताव (शफ़ाअते उ़ज़्मा) पर ईमान रखते हैं जो रसूलुल्लाह ﷺ के लिए ख़ास है। जब लोग असहनीय दुःख एवं कष्ट में ग्रस्त होंगे तो पहले आदम عليه السلام के पास, फिर नूह عليه السلام के पास, फिर इब्राहीम عليه السلام के पास, फिर मूसा عليه السلام के पास, फिर ईसा عليه السلام के पास, और अंत में मुहम्मद ﷺ के पास जायेंगे तो आप ﷺ अल्लाह की आज्ञा से उसके समक्ष सिफ़ारिश करेंगे ताकि वह अपने बन्दों के दरमियान फ़ैसला कर दे।

और हमारा ईमान है कि जो मोमिन अपने गुनाहों के कारण नरक में प्रवेश कर जायेंगे उनको वहाँ से निकालने के लिए भी अभिस्ताव होगा तथा उसका सम्मान नबी ﷺ और आपके अतिरिक्त अन्यों को भी (जैसे अम्बिया, मोमिनीन, फ़रिश्ते) प्राप्त होगा।

और हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला मोमिनों में से कुछ लोगों को बिना अभिस्ताव के केवल अपनी दया एवं अनुकम्पा के आधार पर नरक से निकालेगा।

हम प्यारे नबी ﷺ के हौज़ पर भी ईमान रखते हैं। उसका पानी दूध से बढ़कर सफ़ेद, शहद से ज़्यादा मीठा तथा कस्तूरी से बढ़कर सुगन्धित होगा। उसकी लम्बाई एवं चौड़ाई एक मास के यात्रा के समान होगी। तथा उसके आबख़ोरे (पानी पीने के प्याले) सुन्दरता एवं अधिकता में आसमान के तारों की तरह

होंगे। आपके ईमान वाले उम्मती वहाँ से पानी पियेंगे, जिसने वहाँ से एक बार पी लिया उसे कभी प्यास नहीं लगेगी।

हमारा ईमान है कि नरक पर पुलसिरात की स्थापना होगी। लोग अपने कर्मों के अनुसार उस पर से गुज़रेंगे। पहले दर्जे के लोग बिजली की तरह गुज़र जायेंगे, फिर क्रमानुसार कुछ हवा की सी तेज़ी से, कुछ पक्षियों की तरह तथा कुछ तेज़ दौड़ने वाले पुरुषों की तरह गुज़रेंगे। और नबी ﷺ पुलसिरात पर खड़े दुआ़ माँग रहे होंगेः ऐ अल्लाह! इन्हें सुरक्षित रख इन्हें सुरक्षित रख यहाँ तक कि लोगों के कर्म विवश हो जायें तो वह पेट के बल रेंगते हुये गुज़रेंगे। और पुलसिरात के दोनों ओर कुँडियाँ लटकी होंगी जिनके संबंध में आदेश होगा उन्हें पकड़ लेंगी तो कुछ लोग उनकी ख़राशें से ज़ख़्मी होकर मुक्ति पा जायेंगे तथा कुछ लोग जहन्नम में गिर पड़ेंगे।

किताब व सुन्नत में उस दिन की जो सूचनायें एवं कष्टदायक यातनायें उल्लिखित हैं उन सब पर हमारा ईमान है। अल्लाह तआला इसमें हमारी सहायता करे।

हमारा ईमान है कि नबी करीम ﷺ जन्नतियों के स्वर्ग में प्रवेश के लिए अभिस्ताव करेंगे जो आप ﷺ के ख़ास होगी।

जन्नत-जहन्नम (स्वर्ग-नरक) पर भी हमारा ईमान है। जन्नत नेअ़मतों का वह घर है जिसे अल्लाह तआला ने परहेज़गार मोमिनों के लिए तैयार किया है, उसमें ऐसी ऐसी नेअ़मतें हैं जो किसी आँख ने देखि नहीं है और न किसी कान ने सुनी हैं और न किसी मनुष्य के दिल में इसका ख़्याल ही

आया है।

﴿فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ أُخْفِىَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ﴾

[سورة السجدة: ١٧]

‘‘कोई नफ़्स नहीं जानता जो कुछ हमने उनकी आँखों की ठंडक उनके लिए छिपा रखी है, जो कुछ करते थे यह उसका बदला है।’’ (सूरह सजदाः १७)

तथा जहन्नम कठिन यातना का वह घर है जिसे अल्लाह तआला ने काफ़िरों तथा अत्याचारियों के लिए तैयार कर रखा है। वहाँ ऐसी भयानक यातना है जिसका कभी दिल में खटका भी नहीं हुआ।

﴿إِنَّآ أَعْتَدْنَا لِلظَّـٰلِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۚ وَإِن يَسْتَغِيثُوا۟ يُغَاثُوا۟ بِمَآءٍ كَٱلْمُهْلِ يَشْوِى ٱلْوُجُوهَ ۚ بِئْسَ ٱلشَّرَابُ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا﴾ [سورة الكهف: ٢٩]

‘‘अत्याचारियों के लिए हमने वह आग तैयार कर रखी है जिसकी परिधि उन्हें घेर लेंगी। यदि वे आर्तनाद करेंगे तो उनकी सहायता उस पानी से की जायेगी जो तेलछट जैसा होगा जो चेहरे भून देगा, बड़ा ही बुरा पानी है, तथा बड़ा बुरा विश्राम स्थल (नरक) है।’’ (सूरह कह्फ़ः २६)

तथा स्वर्ग और नरक इस समय भी मौजूद हैं तथा वे सदैव रहेंगे कभी नाश नहीं होंगे।

﴿وَمَن يُؤْمِنۢ بِٱللَّهِ وَيَعْمَلْ صَـٰلِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّـٰتٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَـٰرُ

خَـٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۖ قَدْ أَحْسَنَ ٱللَّهُ لَهُۥ رِزْقًا﴾ [سورة الطلاق: ١١]

''तथा जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान लाये तथ सत्कर्म करे अल्लाह उसे ऐसे स्वर्ग में प्रवेश कर देगा जिसके नीचे नहरें प्रवाहित हैं, जिसमें वे सदैव सदैव रहेंगे। निःसंदेह अल्लाह ने उसे सर्वोत्तम जीविका प्रदान कर रखी है।'' (सूरह तलाक़ः ११)

﴿إِنَّ ٱللَّهَ لَعَنَ ٱلْكَـٰفِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ﴿٦٤﴾ خَـٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۖ لَّا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿٦٥﴾ يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِى ٱلنَّارِ يَقُولُونَ يَـٰلَيْتَنَآ أَطَعْنَا ٱللَّهَ وَأَطَعْنَا ٱلرَّسُولَا۠﴾ [سورة الأحزاب: ٦٤-٦٦]

''अल्लाह ने काफ़िरों पर धिक्कार भेजी है तथा उनके लिए भड़कती हुई अग्नि तैयार कर रखी है, जिसमें वे सदैव रहेंगे, वह कोई पक्षधर एवं सहायता करने वाला न पायेंगे। उस दिन उनके मुख आग में उल्टे-पल्टे जायेंगे। (पश्चाताप तथा खेद से) कहेंगे कि काश हम अल्लाह तथा रसूल की आज्ञा पालन करते।'' (सूरह अहज़ाबः ६४-६६)

तथा हम उन लोगों के स्वर्गीय होने की गवाही देते हैं जिनके लिए किताब व सुन्नत ने नाम लेकर या विशेषतायें बताकर स्वर्ग की गवाही दी है।

जिनका नाम लेकर स्वर्ग की गवाही दी गई है उनमें अबू बक्र, उमर, उसमान, अली ﷺ प्रभृति हैं जिनका निर्धारण नबी ﷺ ने की है।

तथा स्वर्गीय लोगों की विशेषता के आधार पर हरेक मोमिन

और मुत्तक़ी (संयमी) के लिए स्वर्ग की शुभसूचना है।

हम उन सब लोगों को नरकीय होने की गवाही देते हैं जिनका नाम लेकर या अवगुण बयान करके किताब व सुन्नत ने उन्हें नरकीय घोषणा कर दिया है जैसे अबू लहब, अम्र बिन लुहै अल-ख़ुज़ायी प्रभृति।

तथा नरक वालों के अवगुणों के आधार पर हरेक काफ़िर, मुशरिक अथवा मुनाफ़िक़ (द्वयवादी) के लिए नरक की गवाही देते हैं।

और हम क़ब्र की विपत्ति एवं परीक्षा अर्थात मैयत से उसके प्रभु, उसके दीन तथा उसके नबी के बारे में पूछे जाने वाले प्रश्नों पर भी ईमान रखते हैं।

﴿يُثَبِّتُ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ بِٱلْقَوْلِ ٱلثَّابِتِ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَفِى ٱلْءَاخِرَةِ ۖ وَيُضِلُّ ٱللَّهُ ٱلظَّٰلِمِينَ ۚ وَيَفْعَلُ ٱللَّهُ مَا يَشَآءُ﴾ [سورة إبراهيم: ٢٧]

''अल्लाह तआला ईमानदारों को पक्की बात पर दृढ़ रखता है सॉसारिक जीवन में भी तथा परलोकिक जीवन में भी। तथा अल्लाह तआला अन्याय करने वालों को भटका देता है। और अल्लाह तआला जो चाहता है करता है।'' (सूरह इब्राहीमः २७) मोमिन तो कहेगा कि मेरा प्रभु अल्लाह तआला, मेरा दीन इस्लाम तथा मेरे नबी मुहम्मद ﷺ हैं। परन्तु काफ़िर और मुनाफ़िक़ उत्तर देंगे कि मैं नहीं जानता, मैं तो लोगों को जो कुछ कहते हुए सुनता था कह देता था।

हमारा ईमान है कि क़ब्र में मोमिनों को नेअ़मतों से

सम्मानित किया जायेगा।

﴿ٱلَّذِينَ تَتَوَفَّىٰهُمُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ طَيِّبِينَ يَقُولُونَ سَلَٰمٌ عَلَيۡكُمُ ٱدۡخُلُواْ ٱلۡجَنَّةَ بِمَا كُنتُمۡ تَعۡمَلُونَ﴾ [سورة النحل: ٣٢]

''वे जिनके प्राण फ़रिश्ते ऐसी अवस्था में निकालते हैं कि वह स्वच्छ पवित्र हों कहते हैं कि तुम्हारे लिए शान्ति ही शान्ति है, अपने उन कर्मों के बदले स्वर्ग में जाओ जो तुम कर रहे थे।'' (सूरह नहूलः ३२)

तथा अत्याचारियों और काफ़िरों को क़ब्र में यातनायें दी जायेंगी।

﴿وَلَوۡ تَرَىٰٓ إِذِ ٱلظَّٰلِمُونَ فِي غَمَرَٰتِ ٱلۡمَوۡتِ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ بَاسِطُوٓاْ أَيۡدِيهِمۡ أَخۡرِجُوٓاْ أَنفُسَكُمُۖ ٱلۡيَوۡمَ تُجۡزَوۡنَ عَذَابَ ٱلۡهُونِ بِمَا كُنتُمۡ تَقُولُونَ عَلَى ٱللَّهِ غَيۡرَ ٱلۡحَقِّ وَكُنتُمۡ عَنۡ ءَايَٰتِهِۦ تَسۡتَكۡبِرُونَ﴾ [سورة الأنعام: ٩٣]

''यदि आप अत्याचारियों को मौत की घोर यातना में देखेंगे जब यमदूत अपने हाथ लपकाये होते हैं कि अपने प्राण निकालो, आज तुम्हें अल्लाह पर अनुचित आरोप लगाने तथा अभिमान पूर्वक उसकी आयतों का इन्कार करने के कारण अपमानकारी प्रतिकार दिया जायेगा।'' (सूरह अनआ़मः ६३)

तथा इस संबंध में बहुत सारी हदीसें भी प्रसिद्ध हैं, इसलिए ईमानवालों पर अनिवार्य है कि उन परोक्ष की बातों से संबंधी जो कुछ किताब व सुन्नत में उल्लेख है उस पर बिना किसी आपत्ति अभियोग के ईमान ले आयें, तथा संसार के दृश्यों पर

उनका गुमान करके विरोध न फैलायें, क्योंकि आख़िरत के कर्मों का साँसारिक कार्यों से तुलना करना उचित नहीं, इसलिए कि दोनों के बीच बड़ा अन्तर है।

अध्यायः ७

भाग्य पर ईमान

हम भाग्य के अच्छे एवं बुरे होने पर ईमान रखतें हैं जो विश्व के संबंध में ज्ञान तथा हिक्मत के अनुसार अल्लाह तआला का निर्धारण है।

भाग्य के चार मरतबे (दर्जे) हैं:

१- इल्म (ज्ञान):

हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला हर चीज़ के संबंध में जो कुछ हो चुका है और जो कुछ होने वाला है और किस प्रकार होगा, सब कुछ अपने अनादिकाल एवं सर्वकालिक ज्ञान के द्वारा जानता है। उसका ज्ञान नया नहीं है जो अज्ञता के बाद प्राप्त होता है और न ही उसे ज्ञान के बाद भूल-चूक होती है, अर्थात न उसके ज्ञान का कोई आरम्भ है और न ही अंत।

२- किताबत (लिपिन्यास):

हमारा ईमान है कि क़ियामत तक जो कुछ होने वाला है अल्लाह तआला ने उसे लौहे महफ़ूज़ में लिपिबद्ध कर रखा है।

﴿أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِى ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ ۗ إِنَّ ذَٰلِكَ فِى كِتَٰبٍ ۚ

إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى ٱللَّهِ يَسِيرٌ﴾ [سورة الحج: ٧٠]

''क्या आपने नहीं जाना कि आकाश तथा धरती की प्रत्येक वस्तु अल्लाह के ज्ञान में है। यह सब लिखी हुई किताब में सुरक्षित है। अल्लाह के लिए यह कार्य अत्यन्त सरल है।'' (सूरह हज्जः ७०)

३- मशीअत (इश्वरेच्छा):

हमारा ईमान है कि जो कुछ आकाशों एवं धरती में है सब अल्लाह की इच्छा से हुई है। कोई वस्तु उसकी इच्छा के बिना नहीं होती। अल्लाह तआला जो चाहता है वह हो जाता है और जो नहीं चाहता वह नहीं होता है।

४- ख़ल्क़ (रचना):

हमारा ईमान है कि

﴿ٱللَّهُ خَٰلِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿٦٢﴾ لَّهُۥ مَقَالِيدُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ﴾ [سورة الزمر: ٦٢-٦٣]

''अल्लाह समस्त वस्तुओं का रचयिता है, तथा वही प्रत्येक वस्तु का संरक्षक है। आकाशों तथा धरती की चाभियों का वही स्वामी है।'' (सूरह जुमरः ६२-६३)

भाग्य के इन चारों दर्जे में वह सब कुछ आ जाता है जो स्वयं अल्लाह की ओर से होता है तथा जो बन्दों की ओर से होता है। अतः बन्दे जो अंजाम देते हैं चाहे वह कथनात्मक हो या कर्मात्मक हो या वर्जात्मक हो, वह सब अल्लाह के ज्ञान में है एवं उसके पास लिपिबद्ध है, अल्लाह तआला ने उन्हें चाहा तथा उसने उनका रचना किया।

﴿لِمَن شَآءَ مِنكُمْ أَن يَسْتَقِيمَ ﴿٢٨﴾ وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ رَبُّ ٱلْعَٰلَمِينَ﴾ [سورة التكوير: ٢٨-٢٩]

''(विशेष रूप से) उसके लिए जो तुम में से सीधे मार्ग पर

चलना चाहे। तथा तुम बिना समस्त जगत के प्रभु के चाहे कुछ नहीं चाह सकते।'' (सूरह तकवीरः २८-२६)

﴿وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ مَا ٱقْتَتَلُواْ وَلَـٰكِنَّ ٱللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ﴾ [سورة البقرة: ٢٥٣]

''और यदि अल्लाह तआला चाहता तो यह लोग आपस में न लड़ते किन्तु अल्लाह जो चाहता है करता है।'' (सूरह बक़रहः २५३)

﴿وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ﴾ [سورة الأنعام: ١٣٧]

''और अगर अल्लाह चाहता तो वे ऐसा नहीं करते, इसलिए आप उनको तथा उनके मनगढंत को छोड़ दीजिए।'' (सूरह अनआ़मः १३७)

﴿وَٱللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ﴾ [سورة الصافات: ٩٦]

''हालाँकि तुमको और जो तुम करते हो उसको अल्लाह ही ने पैदा किया है।'' (सूरह साफ़्फ़ातः ६६)

लेकिन इसके साथ साथ हमारा यह ईमान भी है कि अल्लाह तआला ने बन्दों को इख़्तियार तथा शक्ति दिया है जिनके आधार पर ही कर्म संघटित होता है।

नीचे उल्लेख किये गये विषय इस बात की दलील हैं कि बन्दे का कर्म उसके अपने इख़्तियार तथा शक्ति के आधार पर संघटित होता हैः

१- अल्लाह तआला का फरमानः

﴿فَأْتُواْ حَرْثَكُمْ أَنَّىٰ شِئْتُمْ﴾ [سورة البقرة: ٢٢٣]

''अपनी खेतियों में जिस प्रकार चाहो आओ।'' (सूरह बक़रहः २२३) और उसका फरमानः

﴿وَلَوْ أَرَادُواْ ٱلْخُرُوجَ لَأَعَدُّواْ لَهُۥ عُدَّةً﴾ [سورة التوبة: ٤٦]

''और अगर वह निकलना चाहते तो उसके लिए संसाधन की तैयारी करते।'' (सूरह तौबाः ४६) अल्लाह तआला ने (पहली आयत में) 'आने' को (और दूसरी आयत में) 'तैयारी' को बन्दे के इच्छाधीन साबित किया।

२- बन्दे को आदेश-निषेध का निर्देशना। अगर बन्दे को इख़्तियार तथा शक्ति न होती तो आदेश-निषेध का निर्देशना उन भारों में से शुमार किया जाता जो ताक़त से बाहर हो, जबकि अल्लाह तआला की हिक्मत व रहमत तथा उसकी सत्य वाणी इसका खन्डन करती है। अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿لَا يُكَلِّفُ ٱللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا﴾ [سورة البقرة: ٢٨٦]

''अल्लाह किसी व्यक्ति को उसकी शक्ति से अधिक भार नही देता।'' (सूरह बक़रहः २८६)

३- सदाचार करने वाले की उसकी सदाचारी पर प्रशंसा एवं दुराचार करने वाले की उसकी दुराचारी पर निंदा तथा उन दोनों में से प्रत्येक को बदला देना जिसके वह योग्य हैं। यदि बन्दे का कर्म उसके इख़्तियार तथा इच्छा से न होता तो सदाचारी की प्रशंसा करना निरर्थ होता एवं दुराचारी को सज़ा देना अत्याचार होता, और अल्लाह तआला निरर्थ कामों एवं अत्याचार से पवित्र है।

४- अल्लाह तआला का रसुलों को भेजना।

﴿رُّسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى ٱللَّهِ حُجَّةُۢ بَعْدَ

ٱلرُّسُلِ﴾ [سورة النساء: ١٦٥]

“(हमने इन्हें) शुभसूचक एवं सचेतकर्ता रसूल बनाया, ताकि लोगों को कोई बहाना तथा अभियोग रसूलों को भेजने के पश्चात अल्लाह पर न रह जाये।” (सूरह निसाः १६५) अगर बन्दे का कर्म उसके इख़्तियार एवं इच्छा से न होता तो रसूल के भेजने से उसका बहाना तथा अभियोग बातिल न होता।

५- हर काम करने वाला व्यक्ति काम करते या छोड़ते समय अपने आपको हर प्रकार कठिनाईयों से मुक्त पाता है। वह केवल अपने इरादा से उठता-बैठता, आता-जाता तथा यात्रा एवं ठहराव करता है, उसे यह अनुभव नहीं होता कि कोई उसे इस पर विवश कर रहा है। बल्कि वह इन कामों में जो उसके इख़्तियार से या किसी के विवश करने से करता है वास्तविक अंतर कर लेता है। इसी तरह शरीअ़त ने इन दोनों अवस्था के दर्मियान हुक्मी अंतर किया है। अतः मनुष्य अल्लाह के अधिकार संबंधी जो कार्य है उसे विवश होकर कर जाये तो उस पर कोई पकड़ नहीं है।

हमारा अक़ीदा है कि पापियों को अपने पाप पर भाग्य से हुज्जत पकड़ने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि वह अपने इख़्तियार से पाप करता है और उसे इसके संबंध में कोई ज्ञान नहीं होता कि अल्लाह तआला ने उसके भाग्य में यही लिख रखा है, क्योंकि किसी कार्य के होने से पूर्व अल्लाह तआला ने जो भाग्य में लिख रखा है उसको कोई जान नहीं सकता।

﴿وَمَا تَدۡرِى نَفۡسٌ مَّاذَا تَكۡسِبُ غَدًا﴾ [سورة لقمان: ٣٤]

''कोई भी नहीं जानता कि वह कल क्या कमायेगा।'' (सूरह लुक़मानः ३४) जब मनुष्य कोई क़दम उठाते समय इस हुज्जत को जानता ही नहीं तो फिर सफाई देते समय उसका इससे हुज्जत पकड़ना कैसे सही हो सकताा है? अल्लाह तआला ने इस हुज्जत को बातिल ठहराते हुये फरमायाः

﴿سَيَقُولُ ٱلَّذِينَ أَشۡرَكُواْ لَوۡ شَآءَ ٱللَّهُ مَآ أَشۡرَكۡنَا وَلَآ ءَابَآؤُنَا وَلَا حَرَّمۡنَا مِن شَيۡءٖۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِهِمۡ حَتَّىٰ ذَاقُواْ بَأۡسَنَاۗ قُلۡ هَلۡ عِندَكُم مِّنۡ عِلۡمٖ فَتُخۡرِجُوهُ لَنَآۖ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا ٱلظَّنَّ وَإِنۡ أَنتُمۡ إِلَّا تَخۡرُصُونَ﴾ [سورة الأنعام: ١٤٨]

''जो लोग शिर्क करते हैं वह कहेंगे कि यदि अल्लाह चाहता तो हम तथा हमारे पूर्वज शिर्क नहीं करते और न हम किसी चीज़ को हराम ठहराते। इसी प्रकार उन लोगों ने झुठलाया जो उनसे पहले थे यहाँ तक कि हमारे प्रकोप (अ़ज़ाब) का मज़ा चख कर रहे। कह दो क्या तुम्हारे पास कोई ज्ञान है तो उसे हमारे लिए निकालो (व्यक्त करो)। तुम कल्पना का अनुसरण करते हो तथा मात्र अनुमान लगाते हो।'' (सूरह अनआ़मः १४८)

तथा हम भाग्य को आधार बनाकर पेश करने वाले पापियों से कहेंगेः आप पुण्य का काम तथा आज्ञापालन क्यों नहीं करते, यह मानते हुये कि अल्लाह तआला ने आपके भाग्य में यही लिखा है। अज्ञानता में कार्य के होने से पहले पाप एवं आज्ञापालन में इस आधार पर कोई अंतर नहीं है। इसीलिए

जब नबी ﷺ ने सहाबा किराम ﷺ को यह सूचना दी कि तुम में हरेक का ठिकाना स्वर्ग या नरक में तय कर दिया गया है तो उन्होंने निवेदन किया कि क्या हम कर्म करने को छोड़कर उसी पर भरोसा न करें? आप ﷺ ने फरमायाः नहीं, तुम अमल करो, क्योंकि जिसको जिस ठिकाने के लिए जन्म दिया गया है उसी के कर्मों के करने का सामर्थ्य उसे दिया जाता है।

तथा अपने पापों पर भाग्य से हुज्जत पकड़ने वालों से कहेंगेः यदि आपका इरादा मक्का की यात्रा का हो, तथा उसके दो मार्ग हों, और आपको कोई विश्वासी व्यक्ति यह ख़बर दे कि उनमें से एक मार्ग बहुत ही भयंकर एवं कष्टदायक है तथा दूसरा बहुत ही सरल एवं शान्तिपूर्ण है, तो आप निश्चय दुसरा ही मार्ग अपनायेंगे। और यह असंभव है कि आप पहले वाले भयंकर मार्ग पर चल निकलें यह कहते हुये कि मेरे भाग्य में यही लिखा है। और अगर आप ऐसा करते हैं तो आपकी गिन्ती दीवानों में होगी।

और हम उनसे यह भी कहेंगे किः यदि आपको दो नौकरियों का प्रस्ताव दिया जाये, उनमें से एक का वेतन अधिक हो तो आप कम वेतन वाली नौकरी के बजाय अधिक वेतन वाली नौकरी को करने के लिए तैयार होंगे, तो फिर परलौकिक कर्म के संबंध में आप अपने लिए क्यों साधारण मज़दूरी को अपनाते हैं और फिर भाग्य का दोहाई देते हैं।

और हम उनसे यह भी कहेंगे किः जब आप किसी शारीरिक रोग में ग्रस्त होते हैं तो अपने उपचार के लिए हर डाक्टर का दरवाज़ा खटखटाते हैं और आपरेशन की पीड़ा एवं

कड़वी दवा पूरे धैर्य के साथ सहन करते हैं, तो फिर आप अपने दिल पर पापों के रोग के हमले की सूरत में ऐसा क्यों नहीं करते।

हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला की अशेष कृपा एवं हिक्मत के चलते बुराई का संबंध उसकी ओर जोड़ा नहीं जाता। नबी ﷺ ने फरमायाः

((وَالشَّرُّ لَيْسَ إِلَيْكَ))

((तथा बुराई तेरी ओर संबंधित नहीं है।)) (मुस्लिम) अल्लाह तआला के आदेशों में स्वयं कभी बुराई नहीं हो सकती, क्योंकि वह उसकी कृपा एवं हिक्मत से जारी होते हैं। बल्कि उसके तक़ाज़ों (उद्देश्य) में अनिष्ट होता है जो बन्दों से घटित होते हैं। नबी ﷺ ने हसन رضي الله عنه को दुआ़ये कुनूत की शिक्षा देते हुये इरशाद फरमायाः

((وَقِنِي شَرَّ مَا قَضَيْتَ))

((मुझे अपनी निर्णीत चीज़ों के अनिष्ट से सूरक्षित रख।)) इसमें अनिष्ट का संबंध अल्लाह के तक़ाज़ों के ओर किया। तथापि (इसके बावजूद) तक़ाज़ों में सिर्फ बुराई ही नहीं है, बल्कि वह अपनी जगह एक आधार से बुराई है तो दूसरे आधार से उपकार, अथवा अपने स्थान पर अनिष्ट है तो दूसरे स्थान पर उपकार है। जैसे अकाल, बीमारी, फक़ीरी तथा भय आदि बुराई हैं, परन्तु दूसरे स्थानों में भलाई तथा उपकार हैं। अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿ظَهَرَ ٱلْفَسَادُ فِى ٱلْبَرِّ وَٱلْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِى ٱلنَّاسِ لِيُذِيقَهُم بَعْضَ ٱلَّذِى عَمِلُوا۟ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ﴾ [سورة الروم: ٤١]

''जल और थल में लोगों के कुकर्मों के कारण फ़साद फैल गया, इसलिए कि उन्हें उनके कुछ करतूतों का फल अल्लाह तआला चखा दे, (बहुत) मुम्किन है कि वह रुक जायें।'' (सूरह रूमः ४१)

तथा चोर का हाथ काटना एवं बियाहता व्यभिचारी को रजम (संगसार) करना, चोर और व्यभिचारी के लिए तो अनिष्ट है क्योंकि एक का हाथ नष्ट होता है एवं दूसरे की जान जाती है। परन्तु दूसरे आधार से यह उनके लिए उपकार है कि इससे पापों का निवारण होता है। और अल्लाह तआला उनके लिए लोक-परलोक की सज़ा इकट्ठा नहीं करेगा। तथा दूसरे स्थान पर यह इस आधार से भी उपकार है कि इससे लोगों की सम्पत्तियों, प्रतिष्ठाओं एवं गोत्रों की रक्षा होती है।

अध्यायः ८

अक़ीदा के लाभ एवं प्रतिकार

इन महान नियमों पर आधारित यह उच्च अक़ीदा अपने मानने वालों के लिए अति श्रेष्ठ प्रतिफल एवं परिणामों का वाहक है।

अल्लाह तआला पर ईमान के लाभ एवं प्रतिकारः

अल्लाह तआला की ज़ात तथा उसके नामों और गुणों पर ईमान से बन्दे के दिलों में उसकी महब्बत एवं उसकी ताज़ीम उत्पन्न होता है, जिसके परिणाम में वह उसके आदेशों के पालन के लिए तैयार रहता है तथा निषिद्ध चीज़ों से सतर्कता बरतता है। और अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करने तथा निषिद्ध कार्यों से सतर्कता बरतने से लोक-परलोक में व्यक्ति तथा समाज के लिए पूर्ण कल्याण प्राप्त होती है।

﴿مَنْ عَمِلَ صَـٰلِحًا مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُۥ حَيَوٰةً طَيِّبَةً ۖ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ﴾ [سورة النحل: ٩٧]

“जो पुण्य का कार्य करे नर हो अथवा नारी, और वह ईमान वाला हो तो हम उसे निःसंदेह सर्वोत्तम जीवन प्रदान करेंगे तथा उनके पुण्य के कार्यों का उत्तम बदला भी उन्हें अवश्य देंगे।” (सूरह नह्लः ९७)

फ़रिश्तों पर ईमान के लाभ एवं प्रतिकारः

१- उनके स्रष्टा की महानता, शक्ति एवं आधिपत्य का ज्ञान।

२- अल्लाह तआला की अपने बन्दों के साथ विशेष कृपा पर उसका शुक्र अदा करना, क्योंकि उसने उन फ़रिश्तों में से कुछ को बन्दों पर स्थापित कर रखा है जो उनकी रक्षा करते हैं तथा उनके कर्मों को लिखते हैं। इसके अतिरिक्त और भी ज़िम्मेदारियाँ उनकेऊ पर हैं।

३- फ़रिश्तों से महब्बत करना इस बिना पर कि वह यथोचित रूप से अल्लाह की उपासना करते हैं तथा मोमिनों के लिए इस्तिग़फ़ार (क्षमा प्रार्थना) करते हैं।

किताबों पर ईमान के लाभ एवं प्रतिकारः

१- सृष्टि पर अल्लाह तआला की कृपा एवं मेहरबानी का ज्ञान, क्योंकि उसने हर क़ौम के लिए वह किताब उतारी जो उन्हें सत्य मार्ग की ओर मार्गदर्शन करती है।

२- अल्लाह तआला की हिक्मत का प्रकटन, क्योंकि उसने इन किताबों में हर उम्मत के लिए वह शरीअ़त निर्धारण की जो उनके लिए मुनासिब थी। इन किताबों में अंतिम किताब पवित्र क़ुरआन है जो क़ियामत तक तमाम सृष्टि के लिए प्रत्येक युग तथा प्रत्येक स्थान में मुनासिब है।

३- इस पर अल्लाह तआला की नेअ़मत का शुक्र अदा करना।

रसूलों पर ईमान के लाभ एवं प्रतिकारः

१- अल्लाह तआला का अपने सृष्टि पर कृपा एवं दया का ज्ञान, क्योंकि उसने इन रसूलों को उनके पास उनके मार्गदर्शन तथा उनके निर्देशना के लिए भेजा।

२- अल्लाह तआला की इस महाकृपा पर उसकी

आभारिता।

३- रसूलों से महब्बत, उनका श्रद्धा और उनकी ऐसी प्रशंसा करना जिसके वह योग्य हैं। क्योंकि वह अल्लाह के रसूल हैं और उसके ख़ालिस बन्दे हैं, जिन्होंने अल्लाह तआला की इबादत करने, उसके संदेश को पहुँचाने और उसके बन्दों को नसीहत करने के कर्तव्य को निभाया तथा दअ़वत के रास्ते में आने वाले दुखों एवं कष्टों पर धैर्य का प्रदर्शन किया।

आख़िरत पर ईमान के लाभ एवं प्रतिकारः

१- उस दिन के प्रतिदान की उम्मीद रखते हुए अल्लाह तआला की आज्ञापालन पर आग्रही (हरीस) बनना एवं उस दिन की सज़ा से डरते हुए उसकी अवज्ञा से दूर रहना।

२- मोमिन के लिए सांत्वना का कारण है दुनिया की उन नेअ़मतों से एवं उसके उन उपकरणों से जो उसे प्राप्त नहीं हो पातीं, क्योंकि उसे परलोकिक नेअ़मतों तथा प्रतिदानों की आशा रहती है।

भाग्य पर ईमान के लाभ एवं प्रतिकारः

१- साधन करते समय अल्लाह तआला पर भरोसा करना, क्योंकि साधन तथा परिणाम दोनों अल्लाह तआला के फ़ैसले तथा उसकी इच्छा पर निर्भरित हैं।

२- आत्मा की राहत तथा दिल की शान्ति, क्योंकि बन्दा जब जान ले कि यह अल्लाह तआला के फ़ैसले से हुआ है तथा अप्रिय विषय निश्चय संघटित होने वाला है, तब आत्मा को राहत, दिल को शान्ति मिल जाती है एवं वह प्रभु के फ़ैसले से संतुष्ट हो जाता है। और जो व्यक्ति भाग्य पर ईमान लाता

है उससे बढ़कर सुखप्रद जीवन तथा सुकून व चैन किसी को प्राप्त नहीं होती।

३- उद्देश्य प्राप्त होने पर आत्मगर्व न करना, क्योंकि इसकी प्राप्ति अल्लाह तआला की ओर से नेअ़मत है जिसे उसने सफलता तथा कल्याण के साधनों में से बनाया है। अतः इस पर अल्लाह का शुक्र बजा लाता है एवं गर्व को वर्जन करता है।

४- उद्देश्य के फ़ौत होने पर या अप्रिय वस्तु की प्राप्ति पर बेचैनी से छुटकारा, क्योंकि वह उस अल्लाह का निर्णय है जो आकाशों एवं धरती का स्वामी है, तथा वह हर अवस्था में होकर रहेगा। अतः वह इस पर सब्र करता है एवं नेकी की उम्मीद रखता है। अल्लाह तआला इसी ओर संकेत करते हुये फरमाता हैः

﴿مَآ أَصَابَ مِن مُّصِيبَةٍ فِي ٱلۡأَرۡضِ وَلَا فِيٓ أَنفُسِكُمۡ إِلَّا فِي كِتَٰبٍ مِّن قَبۡلِ أَن نَّبۡرَأَهَآۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى ٱللَّهِ يَسِيرٞ ﴿٢٢﴾ لِّكَيۡلَا تَأۡسَوۡاْ عَلَىٰ مَا فَاتَكُمۡ وَلَا تَفۡرَحُواْ بِمَآ ءَاتَىٰكُمۡۗ وَٱللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخۡتَالٖ فَخُورٍ﴾ [سورة الحديد: ٢٢-٢٣]

"न कोई कठिनाई (संकट) संसार में आती है न (ख़ास) तुम्हारी जानों में, मगर इससे पूर्व कि हम उसको पैदा करें वह एक ख़ास किताब में लिखी हुई है। निःसंदेह यह (कार्य) अल्लाह पर (बिल्कुल) आसान है। ताकि तुम अपने से छिन जाने वाली वस्तु पर दुखी न हो जाया करो न प्रदान की हुई

वस्तु पर गर्व करने लगो, तथा गर्व करने वाले अहंकारियों को अल्लाह पसंद नहीं फरमाता।" (सूरह हदीदः २२-२३)

अंत में हम अल्लाह तआला से दुआ़ करते हैं कि वह हमें इस अक़ीदा पर दृढ़ प्रतिज्ञा वाला बनाये रखे, उसके लाभों से भाग्यशील बनाये, अपने अनुकम्पाओं से सम्मानित करे, हिदायत के बाद हमारे दिलों को टेढ़े न करे और अपने पास से हमें कृपा प्रदान करे, निःसंदेह वह परम दाता है। सारी प्रशंसा जगत के प्रभु अल्लाह के लिए हैं।

आल्लाह तआला की कृपा नाज़िल हमारे नबी मुहम्मद पर, उनके परिवार-परिजन पर, उनके अस्हाब (साथियों) पर और भलाई के साथ उनके अनुयाईयों पर।

समाप्त

विषय सूची